दैनिक लद्दाख टुडे

Title Code: LDHIN00001 | वर्षः 02 अंकः 187 | जम्मू, कश्मीर, लेह, शुक्रवार 08 अगस्त 2025 | पृष्ठः 8 | मूल्य 2 रुपए

संक्षिप्त समाचार

एसएसपी जम्मू ने थाना प्रभारियों का तबादला किया

लद्दाख टुडे ब्यूरो

जम्मू। वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक (एसएसपी) जम्मू जोगिंदर सिंह ने जम्मू जिले के विभिन्न थानों में कई थाना प्रभारियों (एसएचओ) के स्थानांतरण और नियुक्ति के आदेश दिए हैं।

आधिकारिक आदेश के अनुसार, इंस्पेक्टर अरुण प्रकाश को बख्शी नगर का थाना प्रभारी, जबकि इंस्पेक्टर आज़ाद मन्हास को मीरां साहिब का थाना प्रभारी नियुक्त किया गया है। इंस्पेक्टर जय पॉल शर्मा अब गांधी नगर के थाना प्रभारी और इंस्पेक्टर राकेश सिंह को बिश्नाह का थाना प्रभारी नियुक्त किया गया है।

इंस्पेक्टर सुशील चौधरी को त्रिकुटा नगर थाना का प्रभार दिया गया है और इंस्पेक्टर राजेश जसरोटिया अब अखनूर के थाना प्रभारी होंगे, जबकि इंस्पेक्टर राकेश मन्नी को पक्का डंगा का थाना प्रभारी नियुक्त किया गया है।

इसी प्रकार, इंस्पेक्टर निशांत गुप्ता को नवाबाद का थाना प्रभारी, इंस्पेक्टर दीपक पठानिया को छन्नी का थाना प्रभारी और इंस्पेक्टर विकास डोगरा

■ शेष पेज 2...

कौन हैं पीसी मोहन? जिनकी बेंगलुरु सेंट्रल लोकसभा सीट पर राहुल गांधी ने लगाया है श्वोट चोरीश का बड़ा आरोप

बेंगलुरु। लोकसभा चुनावों के बाद इलेक्शन में हेराफेरी के आरोप लगा रहे कांग्रेस नेता राहुल गांधी ने अपना एटम बम बेंगलुरु सेंट्रल लोकसभा सीट पर फोड़ा है। राहुल गांधी ने बेंगलुरु सेंट्रल लोकसभा सीट का उदाहारण देते श्वोट चोरीश का बड़ा आरोप लगाया है। कर्नाटक की इस सीट पर पिछले चुनावों में बीजेपी के प्रत्याशी पीसी मोहन जीते थे। उन्होंने लगातार चौथी बार जीत दर्ज की थी। बेंगलुरु सेंट्रल लोकसभा 2008 में हुए परिसीमन के बाद बनी थी। तब से लगातार इस सीट पर पीसी मोहन का कब्जा है। उन्होंने 2009 के पहले चुनावों को छोड़कर सभी चुनावों में 50 फीसदी से अधिक मत अधिक हासिल किए हैं।

राहुल गांधी ने अपने वोट चोरी के एटम बम खुलासे में कहा है कि कर्नाटक की बेंगलुरु सेंट्रल लोकसभा सीट पर कांग्रेस भाजपा से 3 प्रतिशत से भी कम अंतर से हारी थी। वहां नकली मतदाता

■ शेष पेज 2...

------ जम्मू ---------

अधिकतम – 32°C

न्यूनतम – 26°C

------- श्रीनगर -------

अधिकतम – 26°C

न्यूनतम – 17°C

भारत किसानों के हितों से समझौता नहीं करेगा, भारी कीमत चुकाने को तैयार : प्रधानमंत्री मोदी

नई दिल्ली। अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप को एक सूक्ष्म संदेश में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने गुरुवार को कहा कि भारत अपने किसानों और डेयरी क्षेत्र के हितों से कभी समझौता नहीं करेगा और उन्होंने कहा कि यदि आवश्यक हुआ तो वह व्यक्तिगत रूप से बड़ी कीमत चुकाने को तैयार है।

यह बयान ट्रंप द्वारा भारतीय वस्तुओं पर टैरिफ बढ़ाकर 50 प्रतिशत करने के एक दिन बाद आया है जबकि दोनों देश द्विपक्षीय व्यापार समझौते पर चर्चा कर रहे है। यह व्यापार समझौता भारत के कृषि और डेयरी बाजार तक अधिक पहुँच की अमेरिका की माँग के बाद हुआ है। वह मक्का, सोयाबीन, सेब, बादाम और इथेनॉल जैसे उत्पादों पर टैरिफ कम करने के साथ–साथ अमेरिकी डेयरी उत्पादों की पहुँच बढ़ाना चाहता है।

हालाँकि, नई दिल्ली इन मांगों का विरोध कर रही है क्योंकि इनका सीधा असर किसानों पर पड़ेगा। जन्म शताब्दी के उपलक्ष्य में आयोजित तीन दिवसीय वैश्विक सम्मेलन को संबोधित करते हुए मोदी ने कहा हमारे लिए अपने किसान का हित सर्वोपरि है। भारत अपने किसान, पशु पालकों और मछुआरे भाई–बहनों के हित को कभी भी समझौता नहीं करेगा।

प्रधानमंत्री ने कहा कि वह किसानों के हितों की रक्षा के लिए व्यक्तिगत रूप से भारी कीमत चुकाने को तैयार हैं। उन्होंने कहा, मुझे पता है कि मुझे व्यक्तिगत रूप से बहुत भारी कीमत चुकानी पड़ेगी। लेकिन मैं इसके लिए तैयार हूँ। इसके अलावा, उन्होंने कहा, मेरे देश के मछुआरों के लिए, मेरे देश के पशुपालकों के लिए, आज भारत तैयार है।

मोदी ने महान वैज्ञानिक स्वामीनाथन के सम्मान में एक स्मारक सिक्का और डाक टिकट भी जारी किया। अपने संबोधन के दौरान प्रधानमंत्री ने कृषि और संबद्ध क्षेत्र के सर्वांगीण विकास के लिए सरकार द्वारा कार्यान्वित विभिन्न योजनाओं पर प्रकाश डाला।

उन्होंने ■ शेष पेज 2...

उधमपुर में बड़ा हादसा, खाई में गिरी सीआरपीएफ की बस, तीन जवानों की मौत, 15 घायल

लद्दाख टुडे ब्यूरो

उधमपुर (संजीव भार्मा)। उधमपुर जिले के बसंतगढ़ इलाके में कंडवा के पास गुरुवार को एक वाहन के दुर्घटनाग्रस्त होने से केंद्रीय रिजर्व पुलिस बल (सीआरपीएफ) के तीन जवानों की मौत हो गई और 15 अन्य घायल हो गए। अधिकारियों ने यह जानकारी दी। 23 जवानों को ले जा रहा सीआरपीएफ का वाहन उधमपुर जिले में सड़क से फिसलकर एक नाले में गिर गया। यह घटना सुबह करीब 10.30 बजे कदवा इलाके में हुई जब सुरक्षाकर्मी बसंतगढ़ में एक ऑपरेशन से लौट रहे थे। यह वाहन बल की 187वीं बटालियन का था।

दो जवानों की मौके पर ही मौत हो गई, जबकि 16 अन्य घायल हो गए। सभी घायलों को तुरंत ■ शेष पेज 2...

चिनाब और अंजी पुलों के निर्माण के दौरान हिमालयी पारिस्थितिकी में न्यूनतम व्यवधान सुनिश्चित किया गया : रेल मंत्री अश्विनी वैष्णव

नई दिल्ली। लोकसभा को बताया गया कि हिमालयी पारिस्थितिकी में न्यूनतम व्यवधान सुनिश्चित करने के लिए, ढलान स्थिरीकरण का पूरा ध्यान रखा गया और चिनाब और अंजी पुल सहित उधमपुर–श्रीनगर–बारामूला रेल लिंक के कार्यान्वयन के लिए सर्वश्रेष्ठ ■ शेष पेज 2...

कौन होगा उपराष्ट्रपति पद का उम्मीदवार?

पीएम मोदी का फैसला एनडीए के सभी दलों को मंजूर होगा

नई दिल्ली। उपराष्ट्रपति चुनाव के लिए गुरुवार को एनडीए संसदीय दल के फ्लोर लीडर्स की एक बैठक हुई। इस बैठक की अगुवाई रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह ने की। इस बैठक में सर्वसम्मति से यह फैसला किया गया कि इस चुनाव की प्रक्रिया शुरू करने से लेकर उम्मीदवार तय करने तक का काम प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और राज्यसभा में नेता सदन जेपी नड्डा करेंगे। एनडीए में शामिल सभी दलों ने यह तय किया है कि पीएम मोदी का फैसला सभी दलों को मंजूर होगा।

एनडीए संसदीय पार्टी के फ्लोर लीडर्स की बैठक के बाद संसदीय कार्यमंत्री किरेन रिजिजू ने बताया कि रक्षामंत्री राजनाथ सिंह की अगुवाई में एनडीए संसदीय दल के नेताओं की बैठक में सर्वसम्मति से एनडीए ने प्रधानमंत्री और राज्यसभा में सदन के नेता जेपी नड्डा को उम्मीदवार चुनने के साथ सभी प्रक्रिया शुरू करने के लिए अधिकृत किया। प्रधानमंत्री की ओर से लिया गया फैसला एनडीए के सभी दलों को स्वीकार होगा।

एनडीए नेताओं की यह बैठक संसद भवन में हुई। उपराष्ट्रपति का चुनाव स्वास्थ्य कारणों से जगदीप धनकड़ ■ शेष पेज 2...

एनआईटी श्रीनगर में 'नैनो और सुपरमॉलिक्युलर केमिस्ट्री' पर पहला राष्ट्रीय सम्मेलन शुरू

युवा शोधकर्ताओं को स्थायी वैज्ञानिक समाधानों पर ध्यान केंद्रित करना चाहिए: एनआईटी श्रीनगर के निदेशक

लद्दाख टुडे ब्यूरो

श्रीनगर। राष्ट्रीय प्रौद्योगिकी संस्थान (एनआईटी) श्रीनगर में गुरुवार को नैनो और सुपरमॉलिक्युलर केमिस्ट्री पर पहला राष्ट्रीय सम्मेलन (एनसीएनएससी–2025) शुरू हुआ। रसायन विज्ञान विभाग द्वारा आयोजित इस दो दिवसीय कार्यक्रम का मुख्य विषय नैनोकेमिस्ट्री और सुपरमॉलिक्युलर विज्ञान में अत्याधुनिक विकास है।

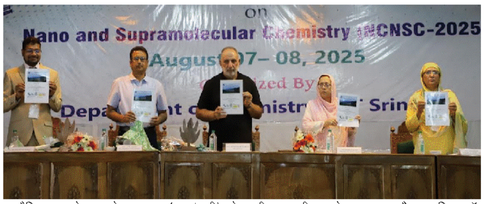

एनआईटी श्रीनगर के निदेशक प्रो. बिनोद कुमार कनौजिया सम्मेलन के मुख्य संरक्षक है जबकि संस्थान के रजिस्ट्रार प्रो. अतीकुर रहमान और डीन रिसर्च एंड कंसल्टेंसी (आरएंडसी) प्रो. रूही नाज़ मीर संरक्षक के रूप में कार्य कर रहे है। रसायन विज्ञान विभागाध्यक्ष प्रो. कौसर मजीद इस सम्मेलन के अध्यक्ष है जबकि डॉ. जिग्नेशकुमार वी. रोहित और डॉ. रवि कुमार आयोजन सचिव है। ■ शेष पेज 2...

रूसी तेल ख़रीदने में भारत चीन के बहुत क़रीब, आपको कई द्वितीयक प्रतिबंध देखने को मिलेंगे : ट्रंप

वाशिंगटन। अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने कहा है कि रूसी तेल ख़रीदने के मामले में भारत चीन के बहुत क़रीब है और 50 प्रतिशत टैरिफ़ का भुगतान करेगा। उन्होंने संकेत दिया कि आपको कई द्वितीयक प्रतिबंध देखने को मिलेंगे। ट्रंप नेओवल ऑफिस में कहा, जैसा कि आप जानते है, हमने भारत पर तेल पर 50 प्रतिशत टैरिफ़ लगाया है। वे दूसरे सबसे बड़े देश है, रूस से तेल ख़रीदने के मामले में वे चीन के बहुत क़रीब है।

ट्रंप ने रूसी संघ की सरकार द्वारा अमेरिका को दी गई धमकियों से निपटने संबंधी एक कार्यकारी आदेश पर हस्ताक्षर किए, जिसमें रूस से तेल ख़रीदने पर भारत पर 25 प्रतिशत अतिरिक्त टैरिफ़ लगाया गया। ■ शेष पेज 2...

कुलगाम में आतंकवाद विरोधी अभियान के बीच स्थानीय लोगों ने कहा 7 दिनों से नहीं सोए हैं, स्थानांतरण की मांग

लद्दाख टुडे ब्यूरो

श्रीनगर। कुलगाम में चल रहे आतंकवाद विरोधी अभियान के बीच, जो गुरुवार को सातवें दिन में प्रवेश कर गया, अखल गाँव के स्थानीय लोगों ने गंभीर कठिनाइयों का हवाला देते हुए इलाके से अपने स्थानांतरण की मांग की है।

निवासियों ने दावा किया कि लगातार गोलीबारी के कारण वे सो नहीं पा रहे है और अब उनके पास खाने का भी सामान खत्म हो रहा है। मुठभेड़ स्थल के पास रहने वाले एक ग्रामीण

मुबारक खांडे ने कहा, हम पिछले सात दिनों से गंभीर कठिनाइयों का सामना कर रहे है। ■ शेष पेज 2...

लेफ्टिनेंट जनरल प्रतीक शर्मा ने दक्षिण कश्मीर में आतंकवाद-रोधी ग्रिड की समीक्षा की

लद्दाख टुडे ब्यूरो

श्रीनगर। उत्तरी कमान के जनरल ऑफिसर कमांडिंग–इन–चीफ (जीओसी–इन–सी) लेफ्टिनेंट जनरल प्रतीक शर्मा ने गुरुवार को दक्षिण कश्मीर में आतंकवाद–रोधी ग्रिड की समीक्षा की और उन्हें क्षेत्र की मौजूदा सुरक्षा स्थिति से अवगत कराया गया।

एक्स पर साझा की गई एक पोस्ट में, भारतीय सेना की उत्तरी कमान ने कहा, उत्तरी कमान के सेना कमांडर लेफ्टिनेंट जनरल प्रतीक शर्मा

ने दक्षिण कश्मीर में आतंकवाद–रोधी ग्रिड की समीक्षा की, जहाँ उन्हें सुरक्षा स्थिति, परिचालन तत्परता और चल रहे ■ शेष पेज 2...

एक्यूआईएस के प्रचार के लिए गिरफ्तार महिला ने ऑपरेशन सिंदूर के दौरान पाक सेना प्रमुख से भारत पर आक्रमण करने का आग्रह किया था: एटीएस

अहमदाबाद। अधिकारियों ने बताया है कि गुजरात एटीएस द्वारा अल–कायदा के एजेंडे को कथित तौर पर बढ़ावा देने के आरोप में गिरफ्तार की गई एक महिला ने ऑपरेशन सिंदूर के दौरान पाकिस्तानी सेना प्रमुख जनरल असीम मुनीर से प्रोजेक्ट खिलाफत के तहत मुस्लिम भूमि को एकजुट करने के लिए भारत पर आक्रमण करने की अपील की थी।

शमा परवीन अंसारी को 29 जुलाई को बेंगलुरु स्थित उनके आवास से उनके सोशल

मीडिया पेजों के माध्यम से प्रतिबंधित आतंकवादी संगठन अल–कायदा इन इंडियन सबकॉन्टिनेंट (एक्यूआईएस) का प्रचार करने के आरोप में गिरफ्तार ■ शेष पेज 2...

खड़गे, सोनिया और अन्य विपक्षी सांसदों ने संसद में एसआईआर के खिलाफ किया प्रदर्शन

नई दिल्ली। कांग्रेस संसदीय दल की अध्यक्ष सोनिया गांधी समेत कई विपक्षी दलों के सांसदों ने गुरुवार को बिहार में चुनाव आयोग द्वारा मतदाता सूची संशोधन (एसआईआर) के खिलाफ संसद भवन परिसर में विरोध प्रदर्शन किया।

बिहार में मतदाता सूची के विशेष गहन पुनरीक्षण (एसआईआर) ■ शेष पेज 2...

सांबा पुलिस ने अवैध खनन के आरोप में 5 डंपरों सहित 6 वाहन किए जब्त

लद्दाख टुडे ब्यूरो

सांबा (निखिल पंगोत्रा)। अवैध खनन के खिलाफ अपने अभियान को जारी रखते हुए सांबा पुलिस ने घगवाल, विजयपुर और सांबा पुलिस थानों के अधिकार क्षेत्र में 5 डंपरों सहित 6 वाहन जब्त किए है जिनका इस्तेमाल निर्माण सामग्री के अवैध परिवहन एवं खनन के लिए किया जा रहा था।

एसएचओ थाना घगवाल, एसएचओ थाना विजयपुर, थाना सांबा के रख अंब टाल्ली और मानसर पुलिस चौकी के प्रभारी

के नेतृत्व में पुलिस टीमों ने अपने अधिकार क्षेत्र में गश्त करते ■ शेष पेज 2...

उत्तरकाशी में अचानक आई बाढ़ में 70 लोगों को बचाया गया, 50 से ज़्यादा लापता : सेना

देहरादून। उत्तरकाशी में अचानक आई बाढ़ से तबाह हुए बचाव अभियान के गुरुवार को तीसरे दिन में प्रवेश करने के साथ ही, सेना ने कहा कि अब तक 70 लोगों को बचा लिया गया है और 50 से ज़्यादा लोग लापता है। अधिकारियों के अनुसार, मंगलवार दोपहर को पारिस्थितिक रूप से नाजुक इस क्षेत्र में आई आपदा में कम से कम चार लोगों की मौत हो गई है। बचावकर्मियों ने बुधवार को दो शव बरामद किए, लेकिन यह स्पष्ट नहीं है कि ये

शव पिछले दिन हुई चार मौतों में शामिल है या नहीं।

ज़िला प्रशासन ने कहा कि विभिन्न ■ शेष पेज 2...

Created by Universal Document Converter

शेष पेज 1 से

भारत किसानों क...

जलवायु परिवर्तन की बढ़ती चुनौतियों के बीच खाद्य उत्पादन को बनाए रखने की आवश्यकता पर बल दिया। मोदी ने फसलों की अधिक जलवायु–प्रतिरोधी किस्मों, जिनमें ताप–प्रतिरोधी किस्में भी शामिल हैं, विकसित करने का आह्वान किया।

एसएसपी जम्मू ने ...

को झज्जर कोटली का थाना प्रभारी नियुक्त किया गया है। इस बीच, इंस्पेक्टर आई.पी. सिंह अब बस स्टैंड के थाना प्रभारी और इंस्पेक्टर शक्ति देवी को शहर का थाना प्रभारी नियुक्त किया गया है।

उधमपुर में बड़ा हादसा, ...

पास के एक अस्पताल ले जाया गया, जहाँ एक और जवान की मौत हो गई, जिससे मृतकों की संख्या बढ़कर तीन हो गई। जम्मू–कश्मीर के उपराज्यपाल मनोज सिन्हा ने सीआरपीएफ कर्मियों की मौत पर दुख व्यक्त किया है। जम्मू–कश्मीर के उपराज्यपाल कार्यालय ने एक पोस्ट में कहा, उधमपुर के पास एक दुर्घटना में सीआरपीएफ कर्मियों की मृत्यु से दुखी हूँ। हम राष्ट्र के प्रति उनकी अनुकरणीय सेवा को कभी नहीं भूलेंगे। मेरी संवेदनाएँ शोक संतप्त परिवारों के साथ हैं। घायलों के शीघ्र स्वस्थ होने की प्रार्थना करता हूँ। वरिष्ठ अधिकारियों को सर्वोत्तम संभव देखभाल और सहायता सुनिश्चित करने के निर्देश दिए हैं।

केंद्रीय मंत्री जितेंद्र सिंह ने एक्स को ट्वीट कर घटना पर चिंता व्यक्त की। उन्होंने कहा कि कंदवा–बसंतगढ़ क्षेत्र में सीआरपीएफ के एक वाहन के साथ हुई सड़क दुर्घटना की खबर सुनकर व्यथित हूँ। वाहन में सीआरपीएफ के कई बहादुर जवान सवार थे। मैंने अभी–अभी डीसी सुश्री सलोनी राय से बात की है, जो व्यक्तिगत रूप से स्थिति पर नज़र रख रही हैं और मुझे जानकारी दे रही हैं। बचाव कार्य तुरंत शुरू कर दिए गए हैं। स्थानीय लोग स्वेच्छा से मदद के लिए आगे आए हैं। हर संभव मदद सुनिश्चित की जा रही है।

कंदवा सड़क हादसे में मृतकों की पहचान आनंद कोच निवासी मेघालय, अरविंद निवासी विहार के रूप में हुई है जबकि तीसरे की पहचान नहीं हो पाई है।

इस हादसे में घायलों की पहचान कारले गजानंद निवासी मेघालय, सुनील जासोर निवासी झारखंड, आमेश कुमार निवासी केरला, मिलन कुमार निवासी झारखंड, मोहम्मद मुश्ताक निवासी राजौरी, गोपा राम निवासी राजस्थान, उदय राज निवासी उत्तर प्रदेश, जितेंद्र प्रधान निवासी झारखंड, सुदलानी मानी निवासी तमिलनाडु, विजय कुमार निवासी गुजरात, मुकेश कुमार निवासी विहार, हारप राम निवासी उड़ीसा, धनराज निवासी महाराष्ट्र, राकेश कुमार निवासी आरएस पूरा जम्मू कश्मीर और सुखविंदर सिंह निवासी दिल्ली के रूप में हुई है। सभी घायलों को एयरलिफ्ट कर उधामपुर भेजा गया।

कौन होगा उपराष्ट्रपति ...

के इस्तीफे की वजह से आयोजित करवाया जा रहा है। धनखड़ ने मॉनसून सत्र के पहले दिन ही राज्यसभा की कार्यवाही संचालित करने के बाद देर रात अचानक इस्तीफा दे दिया था।

चिनाब और अंजी पुलों ...

संस्थानों की सेवाएं ली गईं।

यह पूछे जाने पर कि क्या सरकार ने संवेदनशील हिमालयी क्षेत्रों में चिनाब और अंजी खड्ड पुलों का कोई पर्यावरणीय प्रभाव आकलन किया है, रेल मंत्री अश्विनी वैष्णव ने परियोजना के पर्यावरणीय प्रभाव आकलन पर विस्तृत प्रतिक्रिया दी। वैष्णव ने कहा कि 272 किलोमीटर लंबी उधमपुर–श्रीनगर–बारामूला रेल लिंक (यूएसबीआरएल) परियोजना हाल ही में चालू की गई है और यह जम्मू–कश्मीर के उधमपुर, रियासी, रामबन, श्रीनगर, अनंतनाग, पुलवामा, बडगाम और बारामूला जिलों को कवर करती है।

उन्होंने कहा, यूएसबीआरएल परियोजना आज़ादी के बाद देश में शुरू की गई सबसे कठिन नई रेलवे लाइन परियोजनाओं में से एक है। यह भूभाग युवा हिमालय से होकर गुजरता है, जो भूवैज्ञानिक आश्चर्यों और असंख्य समस्याओं से भरा है। मंत्री ने आगे कहा कि इस परियोजना में, भारतीय रेलवे ने जम्मू और कश्मीर के रियासी ज़िले में चिनाब नदी पर दुनिया का सबसे ऊँचा रेल पुल बनाया है। उन्होंने लोकसभा को बताया, प्रतिष्ठित चिनाब पुल 1,315 मीटर लंबा है, जिसका आर्च स्पान 467 मीटर है और नदी तल से इसकी ऊँचाई 359 मीटर है। इस परियोजना में अंजी खड्ड पर भारतीय रेलवे का पहला केबल–स्टेड पुल बनाया गया है। इसका ब्रिज डेक नदी तल से 331 मीटर ऊपर है और इसके मुख्य तोरण की ऊँचाई 193 मीटर है।

इसके सामाजिक महत्व के बारे में बात करते हुए, वैष्णव ने कहा कि यूएसबीआरएल परियोजना ने इस क्षेत्र में महत्वपूर्ण सामाजिक–आर्थिक योगदान दिया है, जिसमें रोज़गार सृजन इसके प्रभाव का एक महत्वपूर्ण पहलू रहा है क्योंकि इस परियोजना ने 5 करोड़ से अधिक मानव–दिवस रोज़गार उत्पन्न किए हैं। वैष्णव ने कहा, हिमालयी पारिस्थितिकी में न्यूनतम व्यवधान सुनिश्चित करने के लिए, ढलान स्थिरीकरण पर उचित ध्यान दिया गया है और इस परियोजना के क्रियान्वयन के लिए दुनिया के सर्वश्रेष्ठ संस्थानों को शामिल किया गया है। प्राकृतिक भूभागों के कटाव और क्षति को रोकने के लिए नीरी के दिशानिर्देशों और विस्तृत डिज़ाइन सलाहकारों के सुझावों के अनुसार ढलान स्थिरीकरण की व्यापक योजनाएँ अपनाई गई हैं।

उन्होंने आगे कहा, षचिनाब पुल पर ढलान स्थिरता का डिज़ाइन भारतीय विज्ञान संस्थान, बैंगलोर और आईआईटी/दिल्ली द्वारा तैयार किया गया था। रेल मंत्री ने कहा, षचिनाब पुल पर ढलान स्थिरता की स्वतंत्र जाँच के लिए ऐसे कार्यों का अनुभव रखने वाली अन्य वैश्विक फर्मों को भी नियुक्त किया गया था। अंजी पुल पर ढलान स्थिरता का डिज़ाइन और प्रमाण–जाँच भी अनुभवी वैश्विक फर्मों द्वारा की गई थी।

परियोजना के पर्यावरणीय उपायों को रेखांकित करते हुए, उन्होंने कहा, इसके अलावा, कटरा–काजीगुंड नई रेल लाइन के निर्माण के कारण पर्यावरणीय प्रभाव आकलन, जिसमें चेनाब और अंजी खड्ड पुल शामिल हैं, राष्ट्रीय पर्यावरण इंजीनियरिंग अनुसंधान संस्थान (नीरी), नागपुर के माध्यम से भी किया गया है। उन्होंने कहा, नीरी द्वारा तैयार पर्यावरण प्रबंधन योजना (ईएमपी) के आधार पर व्यापक सुरक्षा उपाय और शमन उपाय लागू किए गए हैं।

उन्होंने कहा, सुरंग से निकली सामग्री के प्रबंधन के लिए प्राकृतिक नालों में पानी छोड़ने से पहले सुरंग के निकास द्वारों पर अवसादन टैंक बनाए गए हैं। जिन गाँवों में रिवर्स पंपिंग के कारण प्राकृतिक जल स्रोत बाधित हुए थे, वहाँ वैकल्पिक जल स्रोत उपलब्ध कराए गए हैं।

सतही जल के सुचारू प्रवाह को सुनिश्चित करने और मलबे के ढेरों में कटाव को रोकने के लिए आवश्यक स्थानों पर उचित पंक्तिबद्ध नालियों और सीढ़ीदार ढलानों का निर्माण किया गया था। रेल मंत्री के अनुसार, कंपन और पर्यावरणीय क्षति को कम करने के लिए सुरंग निर्माण के दौरान नियंत्रित विस्फोट की उन्नत तकनीकों को अपनाया गया था। परिचालन चरण के दौरान भी वायु गुणवत्ता की निगरानी के लिए कटरा–बनिहाल खंड की सभी सुरंगों में सेंसर लगाए गए हैं उन्होंने कहा।

पूरी रेल परियोजना सुरंगों और खुले हिस्सों में ओवरहेड कंडक्टर प्रणाली का उपयोग करके विद्युतीकृत है। उन्होंने आगे कहा, रेल परिवहन सबसे पर्यावरण–अनुकूल परिवहन साधन है, जो डीज़ल कर्षण की तुलना में कार्बन फुटप्रिंट को काफ़ी कम करता है। उन्होंने यह भी बताया कि जैव विविधता संरक्षण के विशिष्ट उपायों को ईएमपी में रेखांकित किया गया है, और समग्र पर्यावरणीय शमन प्रयास स्थानीय पारिस्थितिकी की रक्षा में योगदान करते हैं। वैष्णव ने कहा, डंपिंग स्थलों पर वृक्षारोपण गतिविधि के लिए स्थल तैयार करने के दिशानिर्देशों में देशी प्रजातियों के पौधे लगाना और पारिस्थितिकी–पुनर्स्थापन के लिए घास लगाना शामिल है।

रूसी तेल खरीदने में ...

इससे भारत पर लगाए गए कुल शुल्क 50 प्रतिशत हो गए, जो वाशिंगटन द्वारा किसी भी देश पर लगाए गए सबसे अधिक शुल्कों में से एक है। यह शुल्क पिछले सप्ताह ट्रंप प्रशासन द्वारा भारत पर 25 प्रतिशत टैरिफ लगाने की घोषणा के बाद लगाया गया था, जो 7 अगस्त से प्रभावी होगा। अतिरिक्त 25 प्रतिशत शुल्क 21 दिन बाद या 27 अगस्त से लागू होगा।

व्हाइट हाउस के कार्यक्रम में, ट्रंप के साथ एप्पल के सीईओ टिम कुक, उपराष्ट्रपति जे डी वेंस, वित्त मंत्री स्कॉट बेसेंट और वाणिज्य मंत्री हॉवर्ड लुटनिक मौजूद थे, जब प्रौद्योगिकी क्षेत्र की इस दिग्गज कंपनी ने घोषणा की कि वह अगले चार वर्षों में अमेरिका में 600 अरब अमेरिकी डॉलर का निवेश करेगी। ट्रंप से भारत पर अतिरिक्त टैरिफ लगाने के उनके फैसले के बारे में कई सवाल पूछे गए।

यह पूछे जाने पर कि अगर वह यूक्रेन और रूस के साथ समझौता कर लेते हैं, तो क्या वह भारत पर अतिरिक्त टैरिफ हटा देंगे, ट्रंप ने कहा, हम इस पर बाद में फैसला करेंगे, लेकिन अभी वे 50 प्रतिशत टैरिफ दे रहे हैं। इसके बाद ट्रंप को बताया गया कि भारतीय अधिकारियों ने कहा है कि चीन जैसे अन्य देश भी रूसी तेल खरीद रहे हैं, जिस पर उन्होंने कहा, यह ठीक है। इन अतिरिक्त शुल्कों के लिए भारत को ही क्यों ज़िम्मेदार ठहरा रहे हैं, इस पर अमेरिकी राष्ट्रपति ने कहा, अभी सिर्फ़ आठ घंटे ही हुए हैं, देखते हैं आगे क्या होता है... आपको और भी बहुत कुछ देखने को मिलेगा। आपको कई अतिरिक्त प्रतिबंध देखने को मिलेंगे।

अमेरिका ने रूसी आयातों के लिए यह अतिरिक्त शुल्क या जुर्माना सिर्फ़ भारत पर लगाया है, जबकि चीन और तुर्की जैसे अन्य खरीदार अब तक ऐसे प्रतिबंधों से बचे हुए हैं। चीन पर 30 प्रतिशत और तुर्की पर 15 प्रतिशत शुल्क भारत के 50 प्रतिशत से कम है।

भारत पर अतिरिक्त जुर्माने और क्या चीन से होने वाली ख़रीद पर और शुल्क लगाने की उनकी कोई योजना है, इस बारे में पूछे जाने पर ट्रंप ने कहा, हो सकता है, हो सकता है। यह इस पर निर्भर करता है कि हम कैसे करते हैं। हो सकता है। रूसी तेल ख़रीद पर चीन पर संभावित शुल्कों के बारे में एक और सवाल पर उन्होंने कहा, ऐसा हो सकता है, मुझे नहीं पता, मैं आपको अभी नहीं बता सकता। हमने भारत के साथ ऐसा किया है। हम शायद कुछ और देशों के साथ भी ऐसा कर रहे हैं। उनमें से एक चीन हो सकता है।

ट्रंप के अतिरिक्त शुल्कों पर प्रतिक्रिया व्यक्त करते हुए, विदेश मंत्रालय ने एक बयान में कहा कि यह बेहद दुर्भाग्यपूर्ण है कि अमेरिका ने भारत पर उन कदमों के लिए अतिरिक्त शुल्क लगाने का फैसला किया है जो कई अन्य देश भी अपने राष्ट्रीय हित में उठा रहे हैं। विदेश मंत्रालय के बयान में कहा गया है, हमने इन मुद्दों पर अपनी स्थिति पहले ही स्पष्ट कर दी है, जिसमें यह तथ्य भी शामिल है कि हमारे आयात बाजार के कारकों पर आधारित हैं और भारत के 1.4 अरब लोगों की ऊर्जा सुरक्षा सुनिश्चित करने के समग्र उद्देश्य से किए जाते हैं। बयान में आगे कहा गया है कि अमेरिका ने हाल के दिनों में रूस से भारत के तेल आयात को निशाना बनाया है।

एनआईटी श्रीनगर में ...

उद्घाटन सत्र की अध्यक्षता कश्मीर विश्वविद्यालय के रसायन विज्ञान विभाग के पूर्व प्रोफेसर प्रो. मोहम्मद अकबर खुरू ने की और इस अवसर पर मुख्य अतिथि रहे।

एनआईटी श्रीनगर के निदेशक प्रो. बिनोद कुमार कनौजिया ने वर्चुअल माध्यम से सभा को संबोधित करते हुए सम्मेलन में भाग लेने वाले सभी गणमान्य व्यक्तियों, शोधकर्ताओं और छात्रों का स्वागत किया। उन्होंने प्रसन्नता व्यक्त की कि रसायन विज्ञान विभाग ऐसे प्रासंगिक विषय पर राष्ट्रीय स्तर के सम्मेलन का आयोजन कर रहा है। उन्होंने कहा कि नैनोविज्ञान हमें नैनोस्केल पर पदार्थों को समझने में मदद करता है जिससे चिकित्सा, पदार्थ अभियांत्रिकी आदि क्षेत्रों में नई संभावनाएं खुलती हैं। मुझे विश्वास है कि हमारे प्रतिष्ठित वक्ताओं के समृद्ध विचार–विमर्श और ज्ञान–साझाकरण इस सम्मेलन में भाग लेने वाले युवाओं को प्रेरित करेंगे।

प्रो. कनौजिया ने प्रासंगिक विषय पर सम्मेलन आयोजित करने के लिए रसायन विज्ञान विभागाध्यक्ष प्रो. कौसर मजीद और उनकी टीम की प्रशंसा की। उन्होंने कहा कि ऐसे सम्मेलन समय की माँग हैं। एनआईटी श्रीनगर के निदेशक ने भी प्रायोजकों के प्रति उनके सहयोग के लिए आभार व्यक्त किया।

इस अवसर पर बोलते हुए डीन अनुसंधान एवं विकास (आरएंडसी) प्रो. रूही नाज़ मीर ने चिकित्सा, ऊर्जा और पदार्थ विज्ञान सहित विभिन्न क्षेत्रों में नैनो–रसायन विज्ञान और सुपरमॉलिक्युलर रसायन विज्ञान की परिवर्तनकारी क्षमता पर प्रकाश डाला। उन्होंने कहा कि ये क्षेत्र लक्षित औषधि वितरण, ऊर्जा भंडारण, पदार्थ विकास और स्मार्ट डायग्नोस्टिक्स में क्रांति ला रहे हैं। यह सम्मेलन अंतःविषय सहयोग को बढ़ावा देने और नवीन अनुसंधान को बढ़ावा देने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है।

रजिस्ट्रार प्रो. अतीकुर रहमान ने अपने संबोधन में कहा कि यह सम्मेलन केवल विचारकों का एक समागम नहीं है। यह संवाद, खोज और दिशा का एक मंच है, एक ऐसा स्थान जहाँ अभूतपूर्व विचारों का आदान–प्रदान होगा, भविष्य के सहयोग शुरू किए जाएँगे और नवाचारों को बढ़ावा मिलेगा।

अपने अध्यक्षता भाषण में प्रो. मोहम्मद अकबर खुरू ने कहा कि उनका इस संस्थान से पुराना जुड़ाव है और उन्होंने उन दिना. को याद किया जब एनआईटी श्रीनगर को आरईसी (रीजनल इंजीनियरिंग कॉलेज) के नाम से जाना जाता था। इस विभाग के साथ मेरी यात्रा 1980 के दशक में प्रो. शक्ति रईस के नेतृत्व में शुरू हुई। उन्होंने कहा कि कश्मीर विश्वविद्यालय और आरईसी के रसायन विज्ञान विभाग के बीच अक्सर अकादमिक आदान–प्रदान हुआ करता था।

प्रो. खुरू ने युवा शोधकर्ताओं से एक मिशन के साथ विज्ञान का अनुसरण करने का आग्रह किया। यह महत्वाकांक्षी वैज्ञानिकों के लिए बेहतरीन विषयों में से एक है। उन्होंने कहा कि यह युवा शोधकर्ताओं के लिए नए विचारों और सफलताओं से जुड़ने का एक सुनहरा अवसर होगा।

अपने उद्घाटन भाषण में रसायन विज्ञान विभागाध्यक्ष और सम्मेलन की अध्यक्ष, प्रो. कौसर मजीद ने दो दिवसीय राष्ट्रीय सम्मेलन में प्रतिभागियों और गणमान्य व्यक्तियों का औपचारिक स्वागत किया। प्रो. कौसर ने कहा कि यह दो दिवसीय सम्मेलन विद्वानों, प्रोफेसरों और नवप्रवर्तकों के लिए नैनोकेमिस्ट्री और सुपरमॉलिक्युलर केमिस्ट्री के क्षेत्र में सहयोग करने और विचारों को साझा करने के लिए एक जीवंत मंच के रूप में कार्य करता है।

कौन हैं पीसी मोहन? ...

और डुप्लीकेट वोटिंग हुई थी। चुनाव आयोग ने बेंगलुरु वाले दावे को लेकर विपक्ष के नेता पर पलटवार किया है। आयोग ने किए गए दावों को शपथपत्र के तौर पर देने को कहा है। इस पर उन्होंने जवाब दिया है कि मैं लोगों से जो कहता हूं, वही मेरा वचन है। इसे शपथ के रूप में लीजिए। राहुल गांधी ने कहा है कि इस सीट पर कांग्रेस और बीजेपी में वोटों का अंतर सिर्फ 2.58 फीसदी वोटों का था।

बेंगलुरु सेंट्रल लोकसभा सीट से जीतने के बाद चौथी बार लोकसभा पहुंचे पी. चिक्कमुनि मोहन (पीसी मोहन) की उम्र 62 साल है। वह बेंगलुरु के ही रहने वाले हैं। 1991 में विवाह बंधन में बंधे पीसी मोहन ओबीसी लीडर हैं। उनके एक बेटा और एक बेटी है। मोहन दो दशक से अधिक समय से बीजेपी से जुड़े हैं। चार बार के सांसद मोहन दो बार कर्नाटक विधानसभा के चुने जा चुके हैं। तब वह चिकपेट से निर्वाचित हुए थे। मोहन को बेंगलुरु में मेट्रो विस्तार के लिए जाना जाता है। उन्होंने कर्नाटक की राजधानी में मेट्रो रेल को बड़ा करने के लिए बतौर सांसद खूब प्रयास किए। 2024 के लोकसभा चुनावों में जब वह चौथी बार जीत थे। तो चुनाव मैदान में उनके अलावा 23 और कैंडिडेट थे। उन्होंने सीधे मुकाबले में कग्रेस नेता मंसूर अली खान को शिकस्त दी थी।

कुलगाम में आतंकवाद ...

रात में गोलीबारी और बम विस्फोट होते रहते हैं। हमारे घरों में अब राशन की कमी हो गई है।

खांडे ने इस बात पर ज़ोर दिया कि इलाके की महिलाएँ और बच्चे डरे हुए हैं, और लगातार गोलीबारी और विस्फोटों के कारण उनमें मनोवैज्ञानिक समस्याएँ पैदा हो गई हैं। सरकार से उनके पुनर्वास की व्यवस्था करने की अपील करते हुए, खांडे ने कहा, हम सात दिनों से सोए नहीं हैं। बच्चे जाग रहे हैं और रो रहे हैं। दवाइयों और राशन की कमी है। उन्होंने आगे बताया कि इलाके में रहने वाली खानाबदोश आबादी के पास भी अनाज खत्म हो गया है। खांडे ने कहा, गुज्जर लोगों ने हमें फोन किया... उनके पास राशन नहीं है।

हालाँकि, स्थानीय लोग गाँव की देखभाल के लिए नंबरदार और चौकीदार जैसे गाँव के अधिकारियों के आभारी हैं। खांडे ने बताया, ष्नंबरदार अपने घर से लोगों को राशन दे रहा था, लेकिन अब उसे भी राशन की कमी का सामना करना पड़ रहा है। गाँव के एक अधिकारी शेख महबूब ने सरकार से राशन की कमी को दूर करने और गाँव में पीने के पानी की व्यवस्था करने का आग्रह किया।

महबूब ने कहा, हम पानी और दवाओं की कमी का सामना कर रहे हैं। हम अनुरोध करते हैं कि लोक स्वास्थ्य यांत्रिकी (पीएचई) विभाग हमारे लिए पानी की व्यवस्था करे। सुरक्षा बल अपना काम कर रहे हैं, लेकिन जारी गोलीबारी बुजुर्गों और बच्चों के लिए परेशानी का कारण बन रही है। उन्होंने स्थानीय लोगों के लिए एम्बुलेंस की व्यवस्था करने के लिए उपायुक्त और वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक को धन्यवाद दिया।

एक अन्य स्थानीय निवासी शीराज़ा अख्तर ने कुलगाम के उपायुक्त से ग्रामीणों की मदद करने की अपील की। अख्तर ने कहा, हम उपायुक्त से अपील करते हैं। हम गरीब हैं और अभावों का सामना कर रहे हैं। कृपया हमारी मदद करें क्योंकि हम कई समस्याओं का सामना कर रहे हैं। बहुत से लोग जा चुके हैं और कुछ घर खाली हैं। कृपया हमें यहाँ से स्थानांतरित कर दें। अखल इलाके के जंगलों में आतंकवादियों की मौजूदगी की सूचना मिलने के बाद 1 अगस्त को आतंकवाद विरोधी अभियान शुरू किया गया था।

अब तक दो आतंकवादी मारे जा चुके हैं, जबकि कई सुरक्षा बल के जवान घायल हुए हैं। सुरक्षा बल जंगल में छिपे आतंकवादियों का पता लगाने के लिए ड्रोन और हेलीकॉप्टर सहित तकनीकी निगरानी उपकरणों का इस्तेमाल कर रहे हैं। कश्मीर घाटी में इस साल का यह अब तक का सबसे लंबा आतंकवाद विरोधी अभियान है।

लेफ्टिनेंट जनरल प्रतीक ...

अभियानों के बारे में जानकारी दी गई।

एक्स पोस्ट में लिखा था, उन्होंने सभी रैंकों के जवानों की दृढ़ता और लचीलेपन की सराहना की, जिससे क्षेत्र में शांति और सुरक्षा सुनिश्चित करने के लिए भारतीय सेना की दृढ़ प्रतिबद्धता को बल मिला।

एक्यूआईएस के प्रचार ...

किया गया था। आतंकवाद निरोधी दस्ते (एटीएस) ने कहा कि अंसारी एक्यूआईएस और कुछ अन्य कट्टरपंथी प्रचारकों की भड़काऊ, जिहादी और भारत विरोधी सामग्री साझा करने के लिए दो फेसबुक पेज और एक इंस्टाग्राम हैंडल संचालित करती थी, जिसके 10,000 फॉलोअर्स थे।

एटीएस द्वारा जारी एक विज्ञप्ति के अनुसार, 9 मई को, भारत द्वारा पाकिस्तान और पीओके में आतंकी ठिकानों के खिलाफ ऑपरेशन सिंदूर शुरू करने के दो दिन बाद, अंसारी ने अपने फेसबुक अकाउंट पर एक पोस्ट अपलोड की जिसमें जनरल मुनीर से भारत पर हमला करने के ष्सुनहरे अवसरष का लाभ उठाने की अपील की गई थी।

मुनीर की तस्वीर वाले फेसबुक पोस्ट में, अंसारी ने कहा, ष्आपके पास एक सुनहरा अवसर है... इस्लाम के क्रियान्वयन के लिए प्रोजेक्ट खिलाफत को अपनाएँ, मुस्लिम देशों को एकजुट करें, और हिंदुत्व और ज़ायोनीवाद को खत्म करने के लिए आगे बढ़ें...आगे बढ़ें। अंसारी द्वारा अपने इंस्टाग्राम अकाउंट पर साझा किए गए एक वीडियो में, एक धर्मगुरु को भारतीय मुसलमानों द्वारा सेना का समर्थन करने और पहलगाम आतंकी हमले की निंदा करने के लिए आलोचना करते हुए सुना जा सकता है।

विज्ञप्ति में कहा गया है कि अंसारी द्वारा साझा किए गए एक अन्य वीडियो क्लिप में, लाहौर की लाल मस्जिद के इमाम अब्दुल अज़ीज़ को सरकार के खिलाफ सशस्त्र क्रांति के माध्यम से भारत में खिलाफत व्यवस्था स्थापित करने के बारे में भड़काऊ बयान देते हुए सुना जा सकता है।

एटीएस ने बताया कि एक तीसरे वीडियो में एक्यूआईएस नेता ग़ज़वा–ए–हिंद के बारे में बात करते और भारतीय राज्य के ख़िलाफ़ हिंसा भड़काने के लिए भड़काऊ आह्वान करते हुए दिखाई दे रहा है, ख़ासकर हिंदू समुदाय के सदस्यों और लोकतांत्रिक शासन संस्थाओं को निशाना बनाते हुए। एटीएस के अनुसार, अंसारी उन चार लोगों में से एक से जुडी थी जिन्हें दो हफ़्ते पहले अपने इंस्टाग्राम अकाउंट के ज़रिए भड़काऊ सामग्री साझा करने के आरोप में गिरफ़्तार किया गया था।

उत्तरकाशी में अचानक ...

स्थानों पर फंसे 65 लोगों को यहाँ से 432 किलोमीटर दूर मतली कस्बे में हवाई मार्ग से पहुँचाया गया। अधिकारियों ने बताया कि मलबे में फंसे लोगों की तलाश में तेज़ी लाने के लिए सबसे ज़्यादा प्रभावित धराली गाँव में उन्नत उपकरण पहुँचाने के प्रयास भी तेज़ कर दिए गए हैं।

भारतीय सेना ने अन्य अधिकारियों के साथ मिलकर धराली और पास के हरसिल में मानवीय सहायता और आपदा राहत (एचएडीआर) अभियान तेज़ कर दिया है। कई भूस्खलनों और सड़कों के टूटने के कारण यह क्षेत्र अभी भी कटा हुआ है। सेना ने यहां जारी एक आधिकारिक विज्ञप्ति में कहा कि अब तक 70 नागरिकों को बचा लिया गया है और 50 से ज़्यादा लापता हैं। इसमें कहा गया है कि नौ सैन्यकर्मी – एक जूनियर कमीशन अधिकारी और आठ जवान–भी लापता बताए गए हैं।

नौ सैन्यकर्मियों और तीन नागरिकों को हेलीकॉप्टर से देहरादून पहुंचाया गया। गंभीर रूप से घायल तीन नागरिकों को एम्स ऋषिकेश और आठ को उत्तरकाशी जिला अस्पताल में भर्ती कराया गया है। कई स्थानों पर सड़क संपर्क बुरी तरह बाधित है, जिनमें बर्तवारी, लिंचीगाड, हर्षिल के पास, गंगनानी और धराली शामिल हैं। सेना ने कहा कि नागरिक और सैन्य दल फंसे हुए लोगों को बचाने, राहत प्रदान करने और संपर्क बहाल करने के लिए चौबीसों घंटे काम कर रहे हैं।

हर्षिल और नेलोंग में एक सैन्य हेलीपैड चालू हैं और गंगोत्री से सड़क मार्ग से जुड़े हैं, जिससे पर्यटकों की आवाजाही सुविधाजनक हो रही है। धराली में एक नागरिक हेलीपैड भूस्खलन के कारण बंद पड़ा है। सेना के अनुसार, इंजीनियरों, चिकित्सा दलों और बचाव विशेषज्ञों सहित 225 से ज़्यादा सैनिक ज़मीन पर मौजूद हैं। खोजी और बचाव कुत्तों को भी तैनात किया गया है। विज्ञप्ति में कहा गया है कि एक रीको रडार टीम टेकला गाँव में है और एक अन्य रीको रडार को आगे की तैनाती के लिए शामिल किया जा रहा है।

चिनूक और एमआई–17 हेलीकॉप्टर देहरादून के जॉलीग्रांट हवाई अड्डे पर प्रतीक्षा कर रहे हैं और मौसम में सुधार होने पर गुरुवार से नागरिकों को निकालने की संभावना है। राज्य आपदा प्रतिक्रिया बल (एसडीआरएफ) के समन्वय में, सहस्त्रधारा से पाँच नागरिक हेलीकॉप्टर मटली, भटवारी और हर्षिल के बीच बचाव कार्यों के लिए काम कर रहे हैं। मटली हेलीपैड पर एक तदर्थ विमानन बेस स्थापित किया जा रहा है।

विज्ञप्ति में कहा गया है कि गंगोत्री में फंसे लगभग 180–200 पर्यटकों को सेना और भारत–तिब्बत सीमा पुलिस (आईटीबीपी) द्वारा भोजन, आश्रय और चिकित्सा सहायता प्रदान की जा रही है। अगले 24–48 घंटों के लिए एक कार्य योजना तैयार की गई है। इसमें चिनूक हेलीकॉप्टरों द्वारा अर्धसैनिक बलों और चिकित्सा दलों को हर्षिल पहुँचाना और राष्ट्रीय आपदा प्रतिक्रिया बल (एनडीआरएफ) के कर्मियों और चिकित्सकों को एमआई–17 हेलीकॉप्टरों द्वारा नेलोंग पहुँचाना, उत्तरकाशी और टेकला से आगे सड़कें खोलना और वापसी उड़ानों में नेलोंग हेलीपैड से पर्यटकों को निकालना शामिल है।

इससे पहले, जिला प्रशासन ने कहा कि उत्तरकाशी जिले के विभिन्न स्थानों पर फंसे पर्यटकों सहित 65 लोगों को हेलीकॉप्टर द्वारा मातली पहुँचाया गया है। अधिकारियों ने बताया कि उन्हें उनके गंतव्यों तक भेजने के लिए बसों की व्यवस्था की गई है।

बचाव कार्यों की निगरानी के लिए उत्तरकाशी में डेरा डाले हुए मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी ने बसों में बचाए गए कुछ लोगों से बातचीत की। बचाए गए लोगों में देश के विभिन्न हिस्सों से आए तीर्थयात्री शामिल हैं जो मंगलवार की अचानक आई बाढ़ के बाद गंगोत्री के रास्ते में फंस गए थे। उन्होंने सेना, राज्य सरकार और स्थानीय लोगों को आश्रय प्रदान करने और हर संभव सहायता प्रदान करने के लिए धन्यवाद दिया।

एनडीआरएफ, एसडीआरएफ, सेना, आईटीबीपी, पुलिस और अन्य संबंधित एजेंसियां राहत और बचाव कार्यों में लगी हुई हैं। एसडीआरएफ के आईजी अरुण मोहन जोशी ने कहा, आज हमारी प्राथमिकता उन्नत उपकरणों को घटनास्थल पर हवाई मार्ग से पहुँचाना है। बुधवार को उन्नत उपकरणों के साथ आने वाली हमारी टीमें सड़कें बंद होने के कारण रुकी रहीं। उन्होंने कहा कि मलबे के 50 से 60 फुट ऊँचे ढेर हैं और लापता लोग उनके नीचे दबे हो सकते हैं। भूस्खलन के कारण धराली जाने वाली मुख्य सड़कें अवरुद्ध हो गई हैं, जहाँ मंगलवार को दर्जनों लोग फँस गए थे और कई घर और कारें उफनते पानी में बह गईं। उन्नत उपकरण बचावकर्मियों को लापता लोगों की तलाश में भारी मात्रा में मलबे को हटाने में मदद करेंगे।

एक अन्य प्राथमिकता अवरुद्ध सड़कों के कारण विभिन्न स्थानों पर फंसे तीर्थयात्रियों को बचाना है। जोशी ने कहा कि ऐसे तीर्थयात्रियों की संख्या 300–400 हो सकती है। स्थानीय लोगों और पर्यटकों के अलावा, लापता लोगों में मजदूर भी शामिल हो सकते हैं क्योंकि अचानक आई बाढ़ वाली जगह पर कई होटलों का निर्माण कार्य चल रहा था। धराली, गंगोत्री के रास्ते में मुख्य पड़ाव है, जहाँ से गंगा का उद्गम होता है, और यहाँ कई होटल और होमस्टे हैं। अधिकारियों ने बताया कि लापता लोगों का पता लगाने के लिए ग्राउंड पेनेट्रेटिंग रडार और खोजी कुत्तों की भी मदद ली जा सकती है।

खड़गे, सोनिया और ...

के खिलाफ बैनर और पोस्टर लिए कांग्रेस अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खड़गे, सोनिया गांधी, समाजवादी पार्टी के धर्मेंद्र यादव, टीएमसी की सागरिका घोष और अन्य विपक्षी सांसदों ने संसद के मकर द्वार के पास अपना विरोध प्रदर्शन करते हुए नारे लगाए और एसआईआर को वापस लेने की मांग की।

यह उनके विरोध प्रदर्शन का 12वां दिन था, सोमवार को केवल एक दिन का अंतराल था जब विपक्ष ने झारखंड के पूर्व मुख्यमंत्री शिबू सोरेन के निधन के कारण अपना विरोध प्रदर्शन नहीं किया था। प्रदर्शनकारी सांसदों के सामने एक बड़ा बैनर था जिस पर लिखा था श्चर्चा, हटाना नहींश। प्रदर्शनकारी सांसदों द्वारा लिए गए एक अन्य बैनर पर लिखा था एसआईआर– मौन अदृश्य धांधली।

हाथों में एसआईआर रोकें के पोस्टर लिए, जिन पर चुनाव आयोग और सरकार के बीच मिलीभगत का आरोप लगाया गया था, कांग्रेस, डीएमके, टीएमसी और वामपंथी दलों सहित विपक्षी सांसदों ने इस विरोध प्रदर्शन में भाग लिया। विपक्ष संसद के दोनों सदनों में एसआईआर के खिलाफ विरोध प्रदर्शन कर रहा है और आरोप लगा रहा है कि चुनाव आयोग की इस कवायद का उद्देश्य विधानसभा चुनावों से पहले बिहार में मतदाताओं को मताधिकार से वंचित करनाष है। वे दोनों सदनों में इस मुद्दे पर चर्चा की मांग कर रहे हैं।

बिहार में एसआईआर को लेकर संसद में गतिरोध बना हुआ है। दोनों सदनों में ऑपरेशन सिंदूर पर चर्चा को छोड़कर, 21 जुलाई को मानसून सत्र शुरू होने के बाद से संसद में बहुत कम कामकाज हुआ है, क्योंकि ज्यादातर कार्यवाही एसआईआर मुद्दे पर बार–बार स्थगित हुई है।

सांबा पुलिस ने ...

हुए पंजीकरण संख्या जेके21जे–9085, जेके21के–9917, जेके20बी–3146, जेके02सीडब्ल्यू–5013, जेके21जे–8689 वाले पांच डंपर और पंजीकरण संख्या जेके21ई–3277 वाली एक ट्रैक्टर ट्रॉली जब्त की है जिनका इस्तेमाल क्षेत्र में निर्माण सामग्री के अवैध परिवहन एवं खनन के लिए किया जा रहा था।

उपर्युक्त वाहनों को सांबा पुलिस द्वारा जब्त कर लिया गया है और आगे की कानूनी कार्रवाई के लिए भूविज्ञान और खनन विभाग सांबा को सौंप दिया गया है।

Created by Universal Document Converter

ग़ज़वा–ए–हिंद: एक अवधारणा, एक खतरा, और एक ऐतिहासिक चेतावनी

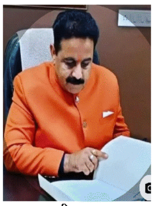

राजीव चाढ़क

"जहाँ विचार शस्त्र बन जाएँ और मजहबी जुनून के नाम पर सम्यताओं को कुचलने की साज़िश रची जाए, वहाँ इतिहास चेतावनी बनकर सामने आता है।"

ग़ज़वा–ए–हिंद क्या है? :"ग़ज़वा" एक अरबी शब्द है, जिसका अर्थ होता है – धार्मिक युद्ध या जिहाद, विशेषकर इस्लामी विजय के लिए किया गया युद्ध।

"ग़ज़वा–ए–हिंद" का शाब्दिक अर्थ है – भारत के विरुद्ध पवित्र युद्ध।

यह अवधारणा उन हदीसों से ली गई है, जिन्हें कुछ इस्लामी कट्टरपंथी समूह प्रचारित करते हैं कृ जिनमें कहा गया है कि "हिंद पर एक निर्णायक युद्ध होगा, जिसमें मुस्लिम सेनाएं विजय पाएंगी।" हालांकि इस हदीस की प्रामाणिकता और उसकी व्याख्या पर इस्लामी विद्वानों में भी मतभेद है, लेकिन कट्टर इस्लामी आतंकी संगठन इसका उपयोग भारत के खिलाफ नफ़रत और हिंसा भड़काने के लिए करते आए हैं।

इतिहास की छाया में कृ ग़ज़वा–ए–हिंद और भारत, भारत का इतिहास इस बात का साक्षी है कि ग़ज़वा–ए–हिंद जैसी मानसि. कता कोई नई नहीं है।

महमूद ग़ज़नवी से लेकर मोहम्मद गौरी, बाबर से लेकर औरंगज़ेब तक – भारत पर इस्लामी झंडा गाड़ने की कोशिश. "धर्म के नाम पर आक्रमण" बनकर आती रहीं।

सोमनाथ मंदिर पर हमला हो या नालंदा विश्वविद्यालय का जलना, काशी, मथुरा और अयोध्या का विध्वंस हो या लाखों हिंदुओं का जबरन धर्मांतरण

इन सबके पीछे एक ही विच. ारधारा थी – "हिंद को दारुल–इस्लाम" बनाना।

आधुनिक आतंकवाद और ग़ज़वा–ए–हिंद का पुनर्जागरण, 21वीं सदी में तालिबान, लश्कर–ए–तैयबा, जैश–ए–मोहम्मद, आईएसआईएस जैसे संगठनों ने इस विचार को फिर से जिंदा किया। पाकिस्तान में बैठे कई मौलाना खुले मंचों से ग़ज़वा–ए–हिंद की भविष्यवाणी करते है।

सोशल मीडिया और वॉट्सऐप यूनिवर्स में इसे "पवित्र मिशन" की तरह पेश किया जाता है।

भारत में "घुसपैठ, लव–जिहाद, और मॉब रेडिकलाइज़ेशन" जैसे कदम, इसी "धीमे जिहाद" का हिस्सा माने जाते है।

भारत के लिए यह सिर्फ एक वैचारिक नहीं, एक राष्ट्रीय सुरक्षा का मामला है ग़ज़वा–ए–हिंद कोई किस्सागोई नहीं – यह भारत की आत्मा पर एक सुनियोजित हमला है। यह उस हजारों साल पुरानी सभ्यता के विनाश का सपना है, जो विविधता में एकता, सहिष्णुता और सनातन मूल्यों की प्रतीक है।

आज जब भारत फिर से उठ खड़ा हुआ है – जब कश्मीर से धारा 370 हटती है, जब राम मंदिर का निर्माण होता है, जब भारत वैश्विक मंच पर निर्णायक भूमिका निभा रहा है

तब ये कट्टर विचारधाराएं फिर से सक्रिय हो गई है। चेतना का समय है, शांति के नाम पर मूर्ख बनने का नहीं! जो लोग "ग़ज़वा–ए–हिंद" जैसी सोच को मज़हबी स्वतन्त्रता का नाम देते हैं, वे या तो अज्ञानता में है या सुनियोजित दोगलापन का शिकार है।

यह समय है – हिंदुओं को जागने का, संगठित होने का मुसलमान भाइयों को कट्टरपंथियों से अलग होकर राष्ट्रीय एकता का हिस्सा बनने का।

सरकारों को सख्त नीतियों और काउंटर–आतंक रणनीतियों पर पुनर्विचार का।

और सबसे बढ़कर – समाज को वैचारिक और सांस्कृतिक स्तर पर दृढ़ प्रतिकार खड़ा करने का।

सुनो पाकिस्तान यह भारत है – अर्जुन की धरती, विवेकानंद की चेतना और वीर शिवाजी की तलवार

ग़ज़वा–ए–हिंद की कल्पना सिर्फ एक मुग़लमानी सपना है – भारत की धरती इसे कभी स्वीकार नहीं करेगी।

सुनो वो पाकिस्तान अब वो पुराना भारत नहीं यह नया भारत है यह मोदी का भारत है, सीमा पर यह सफेद झंडा शांति के लिए चढ़ता नहीं परंतु आपको चढ़ाने के लिए मजबूर करता है जब–जब आपने इस नए भारत में अंतरग्रस्त घटनाएं करने की चेष्टा की तब तब भारतीय सेना ने आपको पाकिस्तान में घुसकर मारा है

यहाँ कोई काफिर नहीं – यहाँ हर आत्मा 'अंश' है उस ब्रह्म का, जिसकी रचना में कोई भेदभाव नहीं।

लेकिन जो इस रचना को मिटाने चले – वे स्वयं इतिहास की राख में बदल जाएँगे।

भारत कभी ग़ज़वा–ए–हिंद नहीं बनेगा –

भारत केवल एक ही रहेगा –

"वसुधैव कुटुम्बक" की भूमि –

लेकिन आवश्यकता पड़ने पर कुरुक्षेत्र भी।

ममता बनर्जी की सरकार में कानून–व्यवस्था पूरी तरह ध्वस्त हो गई है: नड्डा

नई दिल्ली। भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) के अध्यक्ष जे पी नड्डा ने पश्चिम बंगाल में विपक्ष के नेता शुभेंदु अधिकारी के काफिले पर ''राज्य पुलिस की मौजूदगी में'' हुए हमले के लिए मुख्यमंत्री ममता बनर्जी की बृहस्पतिवार को आलोचना करते हुए आरोप लगाया कि यह घटना राज्य में उनकी सरकार में कानून–व्यवस्था के पूरी तरह से ध्वस्त होने को दर्शाती है।

नड्डा ने सोशल मीडिया मंच 'एक्स' पर लिखा, ''अराजकता और राजनीतिक हिंसा की इस संस्कृति को बढ़ावा देने'' के लिए ममता बनर्जी को जवाबदेह ठहराया जाना चाहिए।

पश्चिम बंगाल में महिलाओं के खिलाफ अपराधों को लेकर निकाली गई भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) की रैली पर कुछ लोगों ने बुधवार को कथित रूप से पथराव किया और काले झंडे दिखाए। भाजपा ने इस घटना के लिए सत्तारूढ़ तृणमूल कांग्रेस के कार्यकर्ताओं को जिम्मेदार ठहराया है।

नड्डा ने कहा, ''मैं पश्चिम

बंगाल के नेता प्रतिपक्ष शुभेंदु अधिकारी के काफिले पर कूचबिहार में तृणमूल के गुंडों द्वारा किए गए हमले की कड़ी निंदा करता हूं। इससे भी ज्यादा चिंताजनक बात यह है कि यह हमला राज्य पुलिस की मौजूदगी में हुआ जो ममता बनर्जी की सरकार में कानून–व्यवस्था के पूरी तरह से ध्वस्त होने की बात को स्पष्ट रूप से दर्शाता है।''

उन्होंने कहा कि यह केवल एक निर्वाचित प्रतिनिधि पर हमला नहीं बल्कि लोकतंत्र पर भी हमला है। नड्डा ने कहा कि उन्होंने अधिकारी से बात की और स्थिति का जायजा लिया। भाजपा अध्यक्ष ने कहा, ''अगर पश्चिम बंगाल में विपक्ष का नेता सुरक्षित नहीं है तो आम लोगा. की दुर्दशा की केवल कल्पना ही की जा सकती है।

प्रज्वल रेवन्ना को कैसे एक साड़ी ने पहुंचाया जेल? रेप केस में बन गया अहम सबूत

नई दिल्ली। अपराध के चार साल और प्रकाश में आने के एक साल बाद, निलंबित जद(एस) नेता और पूर्व सांसद प्रज्वल रेवन्ना को पिछले सप्ताह शेष जीवन के लिए कारावास की सजा सुनाई गई, जबकि अदालत ने उन पर कुल 11.50 लाख रुपये का जुर्माना लगाया, जिसमें से 11.25 लाख रुपये पीड़ित महिला को दिए जाने का निर्देश दिया, जो आरोपी के परिवार की घरेलू सहायिका है। विशेष अदालत ने दोषी राजनेता को भारतीय दंड संहिता की विभिन्न धाराओं के तहत दंडित किया और जुर्माना भी लगाया। घटना के एक सप्ताह बाद, एक नया खुलासा हुआ, जब एक फार्महाउस की अटारी में रखी गई एक साड़ी प्रज्वल रेवन्ना के खिलाफ बलात्कार के मामले में एक महत्वपूर्ण मोड़ बन गई, और अंततः यह फोरेंसिक साक्ष्य का महत्वपूर्ण हिस्सा बन गई, जिसके कारण

उसे दोषी ठहराया गया।

यह साबित करने के लिए एक महत्वपूर्ण सबूत था कि प्रज्वल रेवन्ना ही आरोपी था, क्योंकि उसके डीएनए नमूने पीड़िता की साड़ी पर मिले वीर्य से मेल खाते थे। जांचकर्ताओं के अनुसार, बलात्कार के बाद, प्रज्वल ने पीड़िता की साड़ी ले ली, जिसमें भौतिक साक्ष्य थे।

साड़ी को नष्ट करने के बजाय, प्रज्वल ने कथित तौर पर उसे अपने फार्महाउस की अटारी में छिपा दिया, यह सोचकर कि यह कभी नहीं मिलेगी या उसका कोई पता नहीं चलेगा। हालाँकि, यह निर्णय एक गंभीर चूक साबित हुआ। मामले की जाँच के दौरान, जब अधिकारियों ने पीड़िता से पूछा कि हमले के समय उसने क्या पहना हुआ था, तो उसने बताया कि प्रज्वल ने उसकी साड़ी कभी वापस नहीं की, और वह अभी भी फार्महाउस में हो सकती है। इस बिंदु पर कार्रवाई करते हुए, पुलिस ने फार्म हाउस परिसर में छापा मारा और अटारी में साड़ी बरामद की। साड़ी को फोरेंसिक विज्ञान प्रयोगशाला में भेजने के बाद, उसमें वीर्य की उपस्थिति की पुष्टि हुई और डीएनए विश्लेषण से उसका मिलान प्रज्वल से हुआ। जांचकर्ताओं ने कहा कि पीड़िता के बयान के अलावा, साड़ी भी मामले को मज़बूत करने में अहम साबित हुई। सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि साड़ी पर मौजूद डीएनए साक्ष्य, प्रज्वल रेवन्ना के खिलाफ अभियोजन पक्ष के मामले में सबसे महत्वपूर्ण घटकों में से एक बनकर उभरा।

मीडिया पर प्रतिबंध संबंधी आदेश हटाने के खिलाफ याचिका, सुप्रीम कोर्ट में होगी सुनवाई

नई दिल्ली। धर्मस्थल सामूहिक अंत्येष्टि मामले में मीडिया पर प्रतिबंध लगाने के कर्नाटक उच्च न्यायालय के हालिया फैसले को चुनौती देने वाली याचिका पर शुक्रवार को सर्वोच्च न्यायालय सुनवाई करेगा। यह याचिका धर्मस्थल मंदिर संस्थान के सचिव हर्षेंद्र कुमार डी ने दायर की है, जिन्होंने मामले की तत्काल सुनवाई के लिए सर्वोच्च न्यायालय में याचिका दायर की थी। हालांकि सर्वोच्च न्यायालय ने आज मामले की कल सुनवाई के लिए सहमति व्यक्त की, लेकिन यह मामला अभी तक शुक्रवार की सुनवाई सूची में शामिल नहीं हुआ है।

कर्नाटक उच्च न्यायालय ने पिछले शुक्रवार को निचली अदालत द्वारा मीडिया पर लगाए गए प्रतिबंध को "अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता पर असंवैधानिक प्रतिबंध करार देते हुए रद्द कर दिया।

न्यायमूर्ति एम नागप्रसन्ना ने कहा कि जनता के जानने के अधिकार को सीमित नहीं किया जा सकता, खासकर ऐसे मामले में जिसमें कथित संस्थागत विफलताएँ और संभावित आपराधिक गड़बड़ी शामिल हो। इस आदेश ने पहले यूट्यूब चैनल कुडले रैम्पेज सहित 338 व्यक्तियों और संस्थाओं को मामले से संबंधित किसी भी सामग्री को प्रकाशित या प्रसारित करने से रोक दिया था।

कुडले रैम्पेज ने इस निषेधाज्ञा को चुनौती दी, जिसके बाद उच्च न्यायालय ने यह फैसला सुनाया। न्यायालय ने कहा कि निचली अदालत का एकतरफा आदेश पत्रकारिता पर घबराहट पैदा करने वाला था और सार्वजनिक जवाबदेही के मूल पर प्रहार करता था। याचिकाकर्ताओं का प्रतिनिधित्व करने वाले अधिवक्ता ए वेलन ने इस फैसले को एक सशक्त पुष्टि बताया कि कानून का इस्तेमाल संस्थानों को जाँच से बचाने के लिए नहीं किया जा सकता। वेलन ने कहा कि यह मानहानि का मामला नहीं है; यह पारदर्शिता का मामला है। यह जीत सुनिश्चित करती है कि कहानी को दबाया नहीं जाएगा।

गंगा यमुना और शारदा समेत कई प्रमुख नदियों का जलस्तर खतरे के निशान से ऊपर

नई दिल्ली। उत्तर प्रदेश के विभिन्न जिलों में स्थित जल भरण क्षेत्र में व्यापक वर्षा होने से गंगा, यमुना और शारदा समेत राज्य की अनेक प्रमुख नदियों का जलस्तर खतरे के निशान से ऊपर बना हुआ है। उफनती नदियों की बाढ़ से राज्य के अनेक जिलों के सैकड़ों गांवों में जनजीवन अस्त–व्यस्त हो गया है। बलिया में बाढ़ के पानी में डूबने से एक लड़के की मौत हो गयी। मौसम विभाग के अधिकारियों के मुता. बिक, प्रदेश में मानसून सक्रिय है और अगले एक सप्ताह के दौरान पूरे राज्य में बारिश का सिलसिला कमोबेश जारी रह सकता है।

केंद्रीय जल आयोग की रिपोर्ट के अनुसार, बुधवार को गंगा नदी कछला ब्रिज (बदायूं), गाजीपुर, छतनाग और फाफामऊ (प्रयागराज), बलिया, मिर्जापुर और वाराणसी में खतरे के निशान से ऊपर बह रही है। इसी तरह, घाघरा नदी अयोध्या और एल्गिन ब्रिज (बाराबंकी) में खतरे के निशान से ऊपर बह रही है। रिपोर्ट के अनुसार, यमुना नदी नैनी (प्रयागराज) में खतरे के निशान से ऊपर बह रही है। वहीं, भिनगा (श्रावस्ती) और राप्ती बैराज (श्रावस्ती) में राप्ती नदी का जलस्तर अब भी लाल निशान से ऊपर बना हुआ है। शारदा नहर पलियाकलां (लखीमपुर खीरी) में खतरे के निशान से ऊपर बह रही है मगर अब इसका जलस्तर कम हो रहा है। नदियों की बाढ़ से राज्य के अनेक जिलों में जनजीवन पर बुरा असर पड़ा है।

प्रयागराज से प्राप्त रिपोर्ट के मुताबिक, पिछले कई दिनों से जारी भारी बारिश के चलते खतरे के निशान से ऊपर पहुं. चने के बाद गंगा और यमुना का जलस्तर बुधवार से कम शुरू हो गया है मगर सदर तहसील के 107 वार्ड और मुहल्ले अब भी बाढ़ के पानी से घिरे हैं। अपर जिलाधिकारी (वित्त एवं राजस्व) विनीता सिंह ने बताया कि नदियों का

जलस्तर नीचे आने से लोग राहत महसूस कर रहे हैं, मगर सदर तहसील के अंतर्गत आने वाले 107 वार्ड एवं मोहल्ले बाढ़ से प्रभावित हैं जिनमें राजापुर, बेली कछार, चांदपुर सलोरी, गोविंदपुर, छोटा बघाड़ा और बड़ा बघाड़ा प्रमुख रूप से प्रभावित हैं। बलिया जिले में गंगा और सरयू नदी के जलस्तर में वृद्धि के कारण बाढ़ प्रभावित गांवों की संख्या लगातार बढ़ रही है।

बलिया से प्राप्त रिपोर्ट के मुताबिक, हल्दी थाना क्षेत्र के पश्चिम टोला हल्दी गांव में आज बाढ़ के पानी में नहाने के दौरान 11 वर्षीय बालक युवराज गुप्ता की डूबने से मौत हो गई। उसके शव को गोताखोरों व पुलिस की सहायता से निकाल. कर पोस्टमार्टम के लिए भेजा गया है। जिला प्रशासन के बाढ़ नियंत्रण कक्ष के प्रभारी द्वारा उपलब्ध कराए गए आंकड़े के अनुसार गंगा नदी का बृहस्पतिवार को सुबह आठ बजे जल स्तर 59 मीटर 86 सेंटीमीटर रहा, जो खतरे के निशान से दो मीटर 25 सेंटीमीटर अधिक है। सरयू नदी तुर्तीपार में खतरे के निशान से 14 सेंटीमीटर ऊपर बह रही है। जिला प्रशासन के अनुसार, बाढ़ से बलिया जिले के बलिया सदर और बैरिया तहसील मुख्य रूप से प्रभावित हैं।

बैरिया तहसील के कुल 17 राजस्व गांवों की तकरीबन 25 हजार की आबादीबाढ़ से प्रभावित है। वहीं, बलिया सदर तहसील क्षेत्र के 58 राजस्व गांव प्रभावित हुए हैं। साथ ही बलिया नगर पालिका क्षेत्र में कुल पांच वार्ड भी प्रभावित हुए हैं। वाराणसी से प्राप्त रिपोर्ट के मुताबिक, गंगा का जलस्तर हालांकि घट रहा है मगर इसकी बाढ़ से कुल 28 वार्ड प्रभावित हैं। अधिकारियों के मुताबिक बुधवार को महापौर अशोक तिवारी के साथजिलाधिकारी सत्येंद्र कुमार ने मोटर बोट से हरिश्चंद्र घाट, हर्षद घाट, रविदास घाट, सामने घाट, ज्ञान प्रवाह आदि प्रभावित क्षेत्रों का दौरा करके बाढ़ राहत के लिए किये जा रहे कार्यों का निरीक्षण किया।

अधिकारियों ने बताया कि महापौर और जिलाधिकारी ने काशी इंट्रीगेटेड कमांड एंड कंट्रोल सेंटर पहुंचकर वहां से बाढ़ प्रभावित क्षेत्र का जायजा लिया तथा कंट्रोल रूम के लोगों को निर्देशित किया कि वे पूरी तरह सतर्क रहकर 24 घंटे बाढ़ प्रभावित क्षेत्र पर नजर रखें। कौशांबी से प्राप्त रिपोर्ट में पिछले कुछ दिनों से लगातार हो रही बारिश के चलते गंगा और यमुना का जलस्तर बढ़ने से कुछ गांवों तक पहुंचने के मार्ग में पानी भर गया है। जिला प्रशासन ने ग्रामीणों के आवागमन के लिए नावों की व्यवस्था की है।

उप जिलाधिकारी (चायल) आकाश सिंह ने बताया कि चायल तहसील के कटैया और बड़हरी गांव के रास्तों में पानी भर जाने से जिला प्रशासन ने ग्रामीणों के आवागमन के लिए नाव की व्यवस्था की है। उनके मुताबिक, बाढ़ चौकियों पर 'एंटी वेनम इंजेक्शन' और प्राथमिक चिकित्सा सामग्री उपलब्ध कराई गई है। हालांकि बाढ़ प्रभावित लोग, बाढ़ चौकियों में जाने के बजाय आसपास के ग्राम वासियों के घर में रह रहे हैं। इसी तरह, मंझनपुर तहसील क्षेत्र के पभोसा, चक पिन्हा, भवनसुरी, मल्हीपुर और सिंघवल गांव के रास्ते यमुना नदी का बाढ़ का पानी भरने से प्रशासन द्वारा यहां भी नाव की व्यवस्था की गई है।

26/11 के आरोपी राणा को कोर्ट से बड़ी राहत, अपने परिवार से बात करने की मिली इजाजत

नई दिल्ली। दिल्ली की एक अदालत ने गुरुवार को

26/11 मुंबई हमले के आरोपी तहव्वुर हुसैन राणा को निजी वकील की नियुक्ति पर चर्चा के सीमित उद्देश्य के लिए अपने परिवार के सदस्यों से फोन पर बातचीत करने की अनुम. ति दे दी। अदालत के सूत्रों ने यह जानकारी दी। उन्होंने बताया कि विशेष न्यायाधीश चंद्रजीत सिंह ने बंद कमरे में सुनवाई करते हुए यह आदेश पारित किया। वर्तमान में दिल्ली विधिक सेवा प्राधिकरण (डीएलएसए) के अधिवक्ता पीयूष सचदेवा राणा के कानूनी सहायता सलाहकार हैं।

इससे पहले, तिहाड़ जेल अधिकारियों ने राणा के अपने परिवार के सदस्यों से टेलीफोन पर बातचीत करने के आवेदन का विरोध किया था। राणा कथित तौर पर 26/11 के मुख्य षड्यंत्रकारी डेविड कोलमैन हेडली उर्फ दाऊद गिलानी, जो एक अमेरिकी नागरिक है, का करीबी सहयोगी है। राणा को 4 अप्रैल को अमे. रिकी सुप्रीम कोर्ट द्वारा भारत प्रत्यर्पण के खिलाफ उसकी पुनर्विचार याचिका खारिज करने के बाद भारत लाया गया था। 26 नवम्बर 2008 को 10 पाकिस्तानी आतंकवादियों के एक समूह ने एक रेलवे स्टेशन, दो लक्जरी होटलों और एक यहूदी केन्द्र पर हमला किया तथा समुद्री मार्ग से भारत की वित्तीय राजधानी में घुस आये। लगभग 60 घंटे तक चले इस हमले में कुल 166 लोग मारे गये।

बीजेपी ओबीसी मोर्चा द्वारा "एक पेड़ माँ के नाम" अभियान के अंतर्गत जम्मू में वृक्षारोपण कार्यक्रम आयोजित किया गया

जम्मू। मातृत्व और पर्यावरण संरक्षण को समर्पित एक भावपूर्ण पहल के तहत, भारतीय जनता पार्टी ओबीसी मोर्चा जम्मू–कश्मीर द्वारा आज "एक पेड़ माँ के नाम" अभियान के अंतर्गत शक्तिनगर स्थित सामुदायिक पार्क में वृक्षारोपण अभियान आयोजित किया गया।

इस अभियान का नेतृत्व भाजपा ओबीसी मोर्चा जम्मू–कश्मीर के अध्यक्ष ब्रह्म ज्योत सत्ती ने समाजसेवियों के साथ मिलकर किया। इस अवसर पर मातृत्व की पोषक भावना को समर्पित श्रद्धांजलि स्वरूप अनेक पौधे लगाए गए और नागरिकों में पर्यावरणीय जागरूकता को बढ़ावा देने का संदेश दिया गया।

संबोधित करते हुए ब्रह्म ज्योत सत्ती ने कहा कि माँ जीवन, प्रेम और सुरक्षा देती है ठीक वैसे ही जैसे एक पेड़। जब हम अपनी माँ के नाम पर एक पेड़ लगाते हैं, तो हम न केवल उनका सम्मान कर रहे होते हैं, बल्कि आने वाली पीढ़ियों के लिए एक हराभरा और स्वस्थ भविष्य भी सुनिश्चित कर रहे होते हैं।

उन्होंने कहा कि पेड़ रोजगार उत्पन्न करते हैं, फूल, फल, चारा और ईंधन प्रदान करते हैं, मुसाफिरों और उनके पशुओं को छाया देते हैं, पक्षियों व जानवरों को आश्रय देते हैं, मिट्टी के कटाव और बाढ़ को रोकते हैं, जल संरक्षण को बेहतर बनाते हैं, ऑक्सीजन उत्पन्न करते हैं और प्रदूषण को कम करते हैं।

उन्होंने यह भी कहा कि पेड़ व पौधे मानव शरीर पर वायु और ध्वनि प्रदूषण के दुष्प्रभावों को काफी हद तक कम करते हैं। साथ ही पृथ्वी का तापमान भी बढ़ने से रुकता है। लेकिन आज के समय में पेड़ों की अंधाधुंध कटाई की जा रही है, जो चिंता का विषय है।

उन्होंने बताया कि यह अभियान आने वाले दिनों में जम्मू–कश्मीर के विभिन्न जिलों में जारी रहेगा। इसका उद्देश्य हर माँ के नाम पर कम से कम एक पेड़ लगाना है।

इस अवसर पर प्रमुख सामा. जिक कार्यकर्ता रजनीश शर्मा, इंदरजीत, प्रवीन बड्याल, भरत भूषण, बिट्टी जी सहित अन्य गणमान्य लोग उपस्थित रहे और इस प्रेरणादायक अभियान की सराहना की।

इस कार्यक्रम में स्थानीय कार्यकर्ताओं ने भी उत्साहपूर्वक भाग लिया और यह संकल्प लिया कि वे इन लगाए गए वृक्षों की देखभाल करेंगे, जैसे वे अपनी माँ के प्रति प्रेम और सम्मान प्रकट करते हैं। वृक्षारोपण का उद्देश्य जलवायु परिवर्तन और पर्यावरणीय जिम्मेदारी के प्रति जागरूकता फैलाना भी था।

Created by Universal Document Converter

सम्पादकीय

एविएशन सेक्टर में बड़ा निवेश

भारतीय विमानपत्तन प्राधिकरण (एएआई) और पब्लिक–प्राइवेट पार्टनरशिप (पीपीपी) ने हवाई यातायात में वृद्धि के साथ तालमेल बनाए रखने के लिए देश में हवाई अड्डों के विकास, अपग्रेड और आधु. निकीकरण पर वित्त वर्ष 2019–20 से वित्त वर्ष 2024–25 के दौरान 96,000 करोड़ रुपए से अधिक का पूंजीगत व्यय (कैपेक्स) किया है।यह जानकारी सरकार ने गुरुवार को संसद को दी।

इस निवेश में से एएआई का हिस्सा 25,000 करोड़ रुपए से थोड़ा अधिक है। वहीं, बाकी का निवेश निजी एयरपोर्ट डेवलपर्स/ऑपरेटर्स की ओर से किया गया है। नागर विमानन राज्यमंत्री मुरल. ीधर मोहोल ने लोकसभा में एक प्रश्न के लिखित उत्तर में बताया कि एएआई मुख्यत: अपने संसाधनों और क्षेत्रीय संपर्क योजना जैसे उड़े देश का आम नागरिक (आरसीएस–उड़ान) के पहले चरण के अंतर्गत बंद पड़े और कम सेवा वाले हवाई अड्डों, हेलीपोर्ट्स और जल हवाई अड्डों के पुनरुद्धार और अपग्रेड के लिए आवंटित 4,500 करोड़ रुपए के बजट में से पूंजीगत व्यय करता है।

इसके अलावा, आरसीएस–उड़ान के दूसरे चरण में 2023–24 से 2025–26 की अवधि के दौरान अतिरिक्त हवाई अड्डों, हेलीपोर्ट्स, जल हवाई अड्डों और एडवांस्ड लैंडिंग ग्राउंड्स के पुनरुद्धार के लिए 1,000 करोड़ रुपये आवंटित किए गए हैं। उन्होंने आगे कहा कि निजी एयरपोर्ट डेवलपर्स अपने स्वयं के स्रोतों से पूंजीगत व्यय करते हैं।यह निवेश नए हवाई अड्डों, मौजूदा टर्मिनलों के विस्तार और मरम्मत, नई यात्री सुविधाओं को जोड़ने, नए टर्मिनलों, मौजूदा रनवे, एप्रन के विस्तार और सुदृढ़ीकरण और कंट्रोल टावर व तकनीकी ब्लॉक जैसे एयर नेविगेशन सेवाओं (एएनएस) के कार्यों में किया गया है।

नेशनल इन्फ्रास्ट्रक्चर पाइपलाइन (एनआईपी) के वित्त वर्ष 2019–20 से लेकर वित्त वर्ष 2024–25 के आंकड़ों के आधार पर, पिछले पांच वर्षों के दौरान एएआई और निजी एयरपोर्ट डेवलपर्स/ऑपरेटर्स द्वारा वित्त वर्ष 2020–21 में 11,742 करोड़ रुपए, वित्त वर्ष 2021–22 में 13,294 करोड़ रुपए, वित्त वर्ष 2022–23 में 17,879 करोड़ रुपए, वित्त वर्ष 2023–24 में 19,260 करोड़ रुपए और वित्त वर्ष 2024–25 में 19,317 करोड़ रुपए का पूंजीगत व्यय किया गया है।

केंद्रीय मंत्री ने आगे कहा कि हवाई अड्डों का अपग्रेड और आधुनिकीकरण एक सतत प्रक्रिया है और एएआई एवं अन्य निजी एयरपोर्ट ऑपरेटर्स द्वारा समय–समय पर भूमि की उपलब्धता, व्यावसायिक व्यवहार्यता, सामाजिक–आर्थिक पहलुओं, यातायात की मांग और एयरलाइनों की हवाई अड्डों से उड़ान भरने की इच्छा के आधार पर यह कार्य किया जाता है।

धर्म की फुसफुसाहट: दक्षिण पूर्व एशिया के प्राचीन पत्थरों पर हिंदू प्रकाश की वापसी

डॉ. अनिकेत महापात्रा और डॉ. विवेक शर्मा

दक्षिण पूर्व एशिया के हृदयस्थल में, हरे–भरे जंगलों और प्राचीन पत्थर के खंडहरों के बीच, एक समय के समृद्ध हिंदू अतीत की गूँज समय के साथ गूं. जती रहती है। थाईलैंड और कंबोडिया, जो अब अपनी गहरी बौद्ध परंपराओं के लिए जाने जाते हैं, अब तक निर्मित कुछ सबसे भव्य हिंदू मंदिरों का घर हैंकृजो एक हज़ार साल से भी पुराने आध्यात्मिक और सांस्कृतिक बंधन के प्रमाण हैं। फिर भी, आज ये पवित्र स्थल संघर्ष का केंद्र बन गए हैं, विशेष रूप से प्रीह विहिर मंदिर, जिस पर कंबोडिया और थाईलैंड दोनों का दावा है। अजीब बात है कि यही संघर्ष एक अप्रत्याशित द्वार खोल सकता हैकृहिंदू धर्म के लिए इस क्षेत्र में चुपचाप लौटने का अवसर, राजनीति के माध्यम से नहीं, बल्कि साझा इतिहास, स्मृति और श्रद्धा के माध्यम से।

प्रीह विहिर, कंबोडिया–थाईलैंड सीमा पर एक चट्टान पर स्थित एक विस्मयकारी मंदिर, 9वीं शताब्दी में खमेर राजाओं द्वारा भगवान शिव के सम्मान में बनवाया गया था। इसकी जटिल नक्काशी और पवित्र हॉल प्राचीन हिंदू भक्ति की आत्मा से भरे हुए हैं। हालाँकि, आधुनिक युग में, यह पवित्र स्मारक राष्ट्रवादी गौरव और क्षेत्रीय विवाद का केंद्र बन गया है। हालाँकि अंतर्राष्ट्रीय न्यायालय ने 1962 में इसे कंबोडिया को दे दिया था, थाईलैंड ने आसपास की भूमि पर विवाद जारी रखा है। वर्षों से तनाव बढ़ता रहा है, कभी–कभी दुखद रूप से हिंसा और नुकसान का परिणाम हुआ है। लेकिन झंडों और सीमा रेखाओं से परे, जो निर्विवाद है वह है मंदिर की हिंदू पहचान। जैसे–जैसे दोनों राष्ट्र स्वामित्व को लेकर संघर्ष कर रहे हैं, इन स्मारकों के वास्तविक स्वरूप के बारे में जागरूकता बढ़ रही हैकृविशेषकर युवाओं मेंकृ। ये केवल संप्रभुता के लिए पत्थर या युद्ध के मैदान नहीं हैं, बल्कि एक गहरी, साझा सांस्कृतिक और धार्मिक विरासत में निहित पवित्र स्थान हैं जो आधुनिक राजनीतिक विभाजन से पहले की हैं।

थाईलैंड में, ब्रह्मा, विष्णु, शिव और गणेश जैसे हिंदू देवताओं की आज भी व्यापक रूप से पूजा की जाती है, खासकर शाही समारोहों और नगर के मंदिरों में। महाकाव्य रामायण थाई संस्कृति में प्रिय रामकियेन के रूप में जीवित है, जिसे नृत्य, कला और कथावाचन

के माध्यम से मनाया जाता है। कंबोडिया में भी अप्सरा नृत्य, मंदिर अनुष्ठान और प्राचीन हिंदू प्रथाओं में निहित कैलेंडर प्रणालियाँ अब भी मौजूद हैं। जैसे–जैसे मंदिरों को लेकर संघर्ष इन विस्मृत संबंधों को सार्वजनिक चर्चा में लाता है, कई लोग यह सवाल पूछने लगे हैं केवल पत्थर के स्मारकों को ही नहीं, बल्कि उनके पीछे की भावना को पुन: प्राप्त करने का क्या अर्थ है? क्या तनाव का यह क्षण पुनर्खोज और पुनरुत्थान की चिंगारी बन सकता है?

हिंदू धर्म के प्रमुख देवताओं में से एक शिव का भौगोलिक, भाषाई और धार्मिक सीमाओं को पार करते हुए पूरे एशिया में गहरा और व्यापक प्रभाव रहा है। तपस्वी योगी, ब्रह्मांडीय नर्तक (नटराज) और विनाश और उत्थान के देवता के रूप में, शिव की छवि और पूजा न केवल भारतीय उपमहाद्वीप में बल्कि दक्षिण पूर्व एशिया, मध्य एशिया और यहां तक कि पूर्वी एशिया के क्षेत्रों में भी व्याप्त थी। कंबोडिया, थाईलैंड, इंडोनेशिया और वियतनाम जैसे देशों में, जहां प्रारंभिक मध्ययुगीन काल के दौरान शैव–पंथ एक प्रमुख धार्मिक शक्ति बन गया। उनका प्रभाव हिमालय की समन्वयवादी बौद्ध परंपराओं में भी दिखाई देता है, विशेष रूप से तिब्बत और नेपाल में, जहाँ शिव को अक्सर स्थानीय देवताओं के साथ मिला दिया जाता था या महाकाल, एक उग्र बौद्ध रक्षक देवता के रूप में पहचाना जाता था। मध्य एशिया में, प्राचीन बैक्ट्रिया और गांधार के पुरातात्विक निष्कर्षों एशिया भर में शिव की स्थायी उपस्थिति न केवल प्राचीन काल में भारतीय सांस्कृतिक कूटनीति की गतिशीलता को दर्शाती है, बल्कि एशियाई आध्यात्मिकता की अनुकूलनशील और समावेशी प्रकृति को भी दर्शाती है, जहाँ देवता अपने मूल प्रतीकवाद और श्रद्धा को बनाए रखते हुए विविध स्थानीय संदर्भों में विकसित और एकीकृत हुए। यह एक संयोग है या कुछ और, श्रावण के इस पूजनीय महीने में, जब भगवान शिव अपनी चरम अवस्था में होते है, दो प्राचीन विस्तारित हिंदू सभ्यताएँ एक शिव मंदिर के अधिकार के लिए ड्रोन और लड़ाकू विमानों के साथ संघर्षरत है।

आगे का रास्ता— संघर्ष से जुड़ाव की ओर

थाईलैंड और कंबोडिया के लोगों के दिलों–दिमाग में हिंदू धर्म को नई जगह दिलाने के लिए, उसे किसी विदेशी या थोपी हुई चीज़ के रूप में आने की ज़रूरत नहीं है। बल्कि, उसे एक ऐसी चीज़ के रूप में फिर से खोजा जाना चाहिए जो हमेशा से रही हैकृइस क्षेत्र के सांस्कृतिक डीएनए में रची–बसी है। विरासत पर्यटन ऐसा ही एक रास्ता प्रदान करता है। दुनिया भर से पर्यटक अंगकोर वाट या प्रीह विहार आते है और उनकी भव्यता पर अचंभित होते हैं। स्थानीय समुदाय अब इन्हें सिर्फ़ पर्यटकों के लिए अवशेष के रूप में नहीं, बल्कि पूजा और दर्शन के जीवंत स्थलों के रूप में देख रहे हैं। यह अहसास प्राचीन परंपराओंकृ अनुष्ठानों, त्योहारों और कहानियोंकृमें जान फूंक सकता है, जो आज भी अर्थ से गूंजती है। शैक्षिक पहल भी महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकती है। भारतीय और दक्षिण पूर्व एशियाई विद्वानों के बीच साझेदारी साझा इतिहास को उजागर कर सकती है, जबकि सांस्कृतिक आदान–प्रदान संगीत, नृत्य, कला और भाषा को फिर से प्रचलन में ला सकता है। कल्पना कीजिए कि स्थानीय स्कूल संस्कृत या मंदिर वास्तुकला या ऐसे त्योहारों की कक्षाएं प्रदान करते हैं जो रामायण को सिर्फ़ साहित्य के रूप में नहीं, बल्कि मानवीय मूल्यों और दिव्यता की एक जीवंत कहानी के रूप में मनाते है।

हिंदू धर्म के पैतृक निवास के रूप में, भारत इस पुनरुत्थान में एक विशेष स्थान रखता हैकृएक राजनीतिक शक्ति के रूप में नहीं, बल्कि एक सांस्कृतिक और आध्यात्मिक साझेदार के रूप में। सौम्य सांस्कृतिक कूटनीति के माध्यम से, भारत मंदिरों के संरक्षण का समर्थन कर सकता है, ऐतिहासिक शोध के लिए संसाधन प्रदान कर सकता है, और साझा विरासत का सम्मान करने वाले सांस्कृतिक उत्सवों का आयोजन कर सकता है। दक्षिण पूर्व एशिया में प्रवासी भारतीय, जो पहले से ही छोटे हिंदू मंदिरों और समुदायों की देखभाल करते आ रहे हैं, अतीत और वर्तमान के बीच एक सेतु का काम कर सकते है।

महत्वपूर्ण बात यह है कि इस पुनरुत्थान का बौद्ध धर्म से कोई मतभेद नहीं होना चाहिए। दोना. धर्म इस क्षेत्र में सदियों से शांतिपूर्वक सह–अस्तित्व में रहे हैं। यहाँ हिंदू धर्म का पुनरुत्थान धर्मांतरण या प्रभुत्व के बारे में नहीं है; यह एक साझा अतीत का सम्मान करने और आध्यात्मिक विविधता की समृद्धि को अपनाने के बारे में है।

जैसे–जैसे कंबोडिया और थाईलैंड अपने अतीत और वर्तमान से जूझ रहे हैं, वे एक दोराहे पर खड़े हैं। प्राचीन मंदिरों को लेकर संघर्ष विभाजन को बढ़ावा दे सकता हैकृया यह दोनों देशों को रुकने और गहराई से देखने के लिए प्रेरित कर सकता है। राजनीति से परे, सीमाओं से परे, एक पवित्र विरासत छिपी हैकृअपने पूर्वजों की आत्मा से फिर से जुड़ने और उस परंपरा की सुंदरता को फिर से खोजने का अवसर जिसने कभी उनकी भूमि को एकजुट किया था।

इस पुनर्खोज में, हिंदू धर्म को न केवल पुनर्जीवित होने का अवसर मिल सकता हैकृबल्कि यह पुराने घावों को भरने में भी मदद कर सकता है, संघर्ष से जुड़ाव की ओर, और भूली हुई यादों से जीवंत आस्था की ओर एक मार्ग प्रदान कर सकता है।

लेखक: डॉ. अनिकेत महापात्रा
सहायक प्राध्यापक, न्यू अलीपुर कॉलेज, कलकत्ता विश्व. विद्यालय
बाह्य शोध अध्येता, मौलाना अबुल कलाम आज़ाद एशियाई अध्ययन संस्थान,
संस्कृति मंत्रालय– भारत सरकार
और
डॉ. विवेक शर्मा
अकादमिक समन्वयक, कठुआ परिसर, जम्मू विश्वविद्यालय/ संकाय, बौद्ध अध्ययन विभाग,

भारत के खिलाफ ट्रंप का टैरिफ वॉर– बातचीत से पहले दबाव बनाने की कोशिश या बड़ी लड़ाई का संकेत

संतोष कुमार पाठक

अमेरिका के राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने अपनी धमकी के मुताबिक, भारत पर 25 प्रतिशत अतिरिक्त टैरिफ लगाने का ऐलान कर दिया है। इस नए ऐलान के बाद भारत पर अब कुल मिलाकर अमेरिका ने 50 प्रतिशत का टैरिफ लगा दिया है।

अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप के जिद का अंदाजा इसी से लगाया जा सकता है कि उन्होंने दुनिया पर सबसे ज्यादा टैरिफ भारत पर थोप दिया है। ट्रंप के ऐलान के बाद दुनिया के दो देशों– भारत और ब्रा. जील पर सबसे ज्यादा टैरिफ (50 प्रतिशत) लग गया है। ट्रंप का यह फैसला अपने आप में कितना अजीब है कि रूस से सबसे ज्यादा तेल खरी. दने वाले देश चीन पर उसने सिर्फ 30 प्रतिशत का ही टैरिफ लगाया है, जबकि भारत पर 50 प्रतिशत थोप दिया है।

ऐसे में अब सवाल यह उठ रहा है कि डोनाल्ड ट्रंप के इस जिद भरे फैसले को कैसे देखा जाए क्योंकि अमे. रिका इस बात को बखूबी समझता है कि भारत की कोई भी सरकार अमेरिका के दबाव में रूस के साथ अपने कारोबारी रिश्ते को खत्म नहीं कर सकती है। भारत रूस से तेल भी खरी. दता रहेगा और व्यापारिक संबंध भी रखेगा। ऐसे में कई जानकारों का यह भी मानना है कि ट्रंप का यह फैसला बातचीत से पहले भारत पर दबाव बनाने की रणनीति का हिस्सा है। याद दिला दें कि, भारत और अमेरिका के बीच द्विपक्षीय

व्यापार समझौते और टैरिफ को लेकर बातचीत लगातार जारी है और छठे दौर की बातचीत के लिए अमेरिकी अधिकारियों का एक दल 25 अगस्त को भारत के दौरे पर आने वाला है।

अमेरिकी राष्ट्रपति के ऐलान के बाद, भारत ने बुधवार को ही इसका जवाब भी दे दिया था। विदेश मंत्रालय के प्रवक्ता रणधीर जायसवाल ने बुधवार को ही अमेरिका के फैसले की कड़ी आलोचना करते हुए बयान जारी कर कहा कि,"हाल के दिनों में, संयुक्त राज्य अमेरिका ने रूस से भारत के तेल आयात को निशाना बनाया है। हमने इन मुद्दों पर अपनी स्थिति पहले ही स्पष्ट कर दी है, जिसमें यह तथ्य भी शामिल है कि हमारे आयात बाज़ार के कारकों पर आधारित है और भारत के 1.4 अरब लोगों की ऊर्जा सुरक्षा सुनिश्चित करने के समग्र उद्देश्य से किए जाते हैं। इसलिए, यह अत्यंत दुर्भाग्यपूर्ण है कि अमेरिका ने भारत पर उन कार्यों के लिए अतिरिक्त शुल्क लगाने का विकल्प चुना है जो कई अन्य देश भी अपने राष्ट्रीय हित में कर रहे हैं।"

भारत ने अपने बयान में अमेरीकी फैसले की कड़ी आलोचना करते हुए आगे स्पष्ट तौर पर कहा, "हम दोहराते हैं कि ये कार्य अनुचित और अविवेकपूर्ण हैं। भारत अपने राष्ट्रीय हितों की रक्षा के लिए सभी आवश्यक कदम उठाएगा।"

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने गुरुवार को स्वयं मोर्चा संभालते हुए अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप को सख्त संदेश देने का भी प्रयास किया।आईसीएआर पूसा में आयोजित एमएस स्वामीनाथन शताब्दी अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन का उद्घाटन करने के बाद कार्यक्रम को संबोधित करते हुए प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने कहा, "हमारे लिए अपने किसानों का हित सर्वोच्च प्राथमिकता है। भारत अपने किसानों, पशुपालकों और मछुआरे भाई–बहनों के हितों के साथ कभी भी समझौता नहीं करेगा। मैं जानता हूं कि व्यक्तिगत रूप से मुझे बहुत बड़ी कीमत चुकानी पड़ेगी। लेकिन मैं इसके लिए तैयार हूं। मेरे देश के मछुआरों के लिए, मेरे देश के पशु पालकों के लिए आज भारत तैयार है।"

इन तमाम बयानों से यह साफ–साफ नजर आ रहा है कि टैरिफ की यह लड़ाई लंबी खिंचने वाली है। ऐसे में समय की यह मांग कि है भारत अपने राष्ट्रीय हितों की सुरक्षा करने के साथ–साथ अमेरिका को एक बड़ा झटका भी देने की तरफ बढ़े और यह वैश्विक स्तर पर सामूहिक प्रयासों से ही संभव हो सकता है। ब्राजील के राष्ट्रपति लूला दा सिल्वा ने पहले ही डोनाल्ड ट्रंप को बड़ा झटका देते हुए यह कह दिया है कि, वह टैरिफ पर बात करने के लिए ट्रंप को कॉल नहीं करेंगे। इसकी बजाय वह भारतीय पीएम नरेंद्र मोदी, चीनी राष्ट्रपति शी जिनपिंग जैसे नेताओं के साथ बातचीत करना चाहेंगे।

भारत को भी इसी तरह का सख्त स्टैंड लेते हुए बातचीत करने के लिए 25 अगस्त को आ रहे अमे. रिकी अधिकारियों का दौरा रद्द कर देना चाहिए। इसी महीने के अंत में जापान और चीन की यात्रा पर जा रहे प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी को चीन, रूस, ब्राजील, दक्षिण अफ्रीका और जापान के साथ मिलकर डोनाल्ड ट्रंप को सबक सिखाने की रणनीति बनाने पर काम करना चाहिए। लेकिन ऐसा करते समय, चीनी राष्ट्रपति को यह स्पष्ट तौर पर बता भी देना चाहिए कि ऐसे मौके का फायदा उठाकर अगर चीन की सेना ने भारत–चीन सीमा पर कोई नापाक हरकत की तो इसे कतई बर्दाश्त नहीं किया जाएगा।

भारत के लिए सही मायनों में यह आपदा में अवसर का प्रतीक है और अगर हमने अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर सही तरीके से अपना दांव चला तो भारत को विश्व गुरु बनने से कोई रोक नहीं पाएगा।

Created by Universal Document Converter

भारत में कृषि क्रांति तेज गति से जारी

शिवराज सिंह चौहान
केंद्रीय कृषि एवं किसान कल्याण तथा ग्रामीण विकास मंत्री, भारत सरकार

प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के दूरदर्शी नेतृत्व में, निरंतर सुधारों और किसान–केंद्रित पहलों के कारण कृषि क्षेत्र में निरंतर प्रगति हुई है और देश ने धान, गेहूं, मक्का, मूंगफली और सोयाबीन का रिकॉर्ड उत्पादन किया है। कृषि वर्ष 2024–25 के लिए प्रमुख कृषि फसल उत्पादन के तीसरे अग्रिम अनुमान के अनुसार, वर्ष 2024–25 में कुल खाद्यान्न उत्पादन 353.96 मिलियन टन होने का अनुमान है, जो अब तक का सबसे अधिक खाद्यान्न उत्पादन होगा और वर्ष 2014–15 (252.02 मिलियन टन) की तुलना में यह 40 प्रतिशत अधिक रहेगा।

1960 के दशक से पहले की जड़ता और खाद्य असुरक्षा को पीछे छोड़ते हुए आजभारतीय कृषि खाद्य अधिशेष प्राप्त करने की स्थिति में आ गयी है, जिससे माल्थस की यह धारणा गलत साबित होती है कि जनसंख्या वृद्धि, खाद्य उत्पादन की तुलना में अधिक हो जाएगी। 1967 में, विलियम और पॉल पैडॉक ने भारत में अकाल की भविष्यवाणी की थी। उनका दावा था कि देश अपनी बढ़ती आबादी का पेट नहीं भर पाएगा। उन्होंने खाद्य सहायता केखिलाफ विवादास्पद तर्क दिया था, क्योंकि उन्हें डर था कि इससे भविष्य में भुखमरी और बढ़ेगी।

उच्च उपज वाले चावल और गेहूं की किस्मों, कृषि रसायनों और सिंचाई से संचालित हरित क्रांति ने पैडॉक की भविष्यवाणी को गलत साबित कर दिया। भारत का खाद्यान्न उत्पादन 1966–67 के 74 मिलियन टन से बढ़ाकर 1979–80 तक 130 मिलियन टन हो गया। वार्षिक वृद्धि 8.1 मिलियन टन (2014–2025) के शिखर–बिंदु को छूते हुए 354 मिलियन टन तक पहुंच गई। बागवानी फसलें भी 1960 के दशक के 40 मिलियन टन से बढ़कर 2024–25 में 334 मिलियन टन हो गई, जिसमें हाल ही में 7.5 मिलियन टन की वार्षिक वृद्धि हुई है। विपरीत परिस्थितियों को सहन करने में सक्षम किस्मों और अनुकूलकृषि पद्धतियों में प्रगति के कारण फसल उत्पादन में भी अधिक स्थिरता आयी है।

भारत के डेयरी, मुर्गीपालन और मत्स्य पालन क्षेत्रों में उल्लेखनीय वृद्धि हुई है। 1970

के दशक में शुरू हुई श्वेत क्रांति ने दूध उत्पादन को 20 मिलियन टन से बढ़ाकर 2023–24 तक 239 मिलियन टन कर दिया, जो पूरे यूरोप के बराबर है। 1980 के दशक की नीली क्रांति ने मछली उत्पादन को 2.4 मिलियन टन से बढ़ाकर 2024–25 तक 19.5 मिलियन टन कर दिया, जिससे भारत दूसरा सबसे बड़ा समुद्री खाद्य उत्पादक और निर्यातक बन गया। मुर्गीपालन, घरेल. ूगतिविधि से आगे बढ़करएक उद्योग के रूप में विकसित हुआ, जिसमें अंडों का उत्पादन 10 बिलियन से बढ़कर 143 बिलियन हो गयाऔर इसी अवधि में मुर्गी के मांस का उत्पादन 113 हजार टन से बढ़कर 5,019 हजार टन हो गया।

2014–15 और 2023–24 के बीच, पशु–स्रोत से प्राप्त खाद्य के उत्पादन में अभूतपूर्व वृद्धि देखी गई: दूध में सालाना 10. 2 मिलियन टन, अंडों में 6.8 बिलियन इकाई, ब्रॉयलर मांस में 217 हजार टन और मछली (मुख्य रूप से जलीय कृषि) में 0.78 मिलियन टन की वृद्धि हुई। प्रजनन, संसाधन प्रबंधन और कुशल जनशक्ति में तकनीकी प्रगति ने इस तेज वृद्धि को गति दी है। फल, सब्ज़ियां और पशु उत्पाद जैसे उच्च–मूल्य वाले खाद्य पदार्थ अब खाद्यान्न वृद्धि से आगे निकल रहे हैं, जो कृषि विविधीकरण, बेहतर पोषण, किसानों की आय और जलवायु विषम परिस्थितियों के प्रति सहनीयता में प्रौद्योगिकी की महत्वपूर्ण भूमिका को रेखांकित करता है।

भारत की खाद्य उत्पादन सफलता पोषण, किसानों की आय, जलवायु की विषम परिस्थितियों के प्रति सहनीयता और निर्यात को बढ़ावा देने में प्रौद्योगिकी व नीति की परिवर्तनकारी भूमिका को दर्शाती है। आईसीएआर के शोध से पता चलता है कि कृषि में निवेश पर उच्च आय प्राप्त होती है– अनुसंधान और विस्तार पर खर्च किए गए प्रत्येक रुपये पर क्रमशः 13.85 रुपये और 7.40रुपये। पीएमकेएसवाई (सिंचाई), पीएम–किसान (प्रत्यक्ष किसान सहायता), राष्ट्रीय पशुधन मिशन और नीली क्रांति जैसी हाल की सरकारी पहलों ने संसाधनों के उपयोग को बढ़ाकर, जोखिमों को कम करके और कृषि–खाद्यप्रणाली में प्रौद्योगिकी अपनाने को प्रोत्साहन देकर कृषि विकास को और मजबूती दी है।

भारत में विभिन्न खाद्य पदार्थों का वार्षिक वृद्धिशील उत्पादन

2047 तक, भारत ने विक. सित राष्ट्र बनने का लक्ष्य निर्धारित किया है, इसलिए इसकी अर्थव्यवस्था को सालाना 7.8प्रतिशतकी दर से वृद्धि करनी होगी।अनुमान है कि 2047 तक देश की जनसंख्या 1.6 अरब हो जायेगी– जिसमें से आधी आबादी शहरी क्षेत्रों में निवास करेगी। इस बदलाव से खाद्यान्न की कुल मांग दोगुनी हो जाएगी, फलों, सब्जियों और पशु–आधारित खाद्य पदार्थों की मांग तिगुनी होने की उम्मीद है, जबकि अनाज की मांग स्थिर रहेगी, जिससे अधिशेष की स्थिति बनी रहेगी।

हालांकि, बढ़ते शहरीकरण और औद्योगीकरण के कारण कृषि भूमि 180 मिलियन हेक्टेयर से घटकर 176 मिलियन हेक्टेयर और औसत भूमि जोत 1 से घटकर 0.6 हेक्टेयर रह जाएगी। इससे जल और कृषि रसायनों पर दबाव बढ़ेगा, जिससे संसाधना. का क्षरण होने का खतरा होगा। जलवायु परिवर्तन और भी बड़ा जोखिम है, जो स्थायी कृषि और ग्रामीण आजीविका को खतरे में डालता है।

भारत की उभरती कृषि–खाद्य चुनौतियां, उत्पादन–रणनीतियों में बदलाव की मांग करती हैं। प्रतिवर्ष 20 मिलियन टन चावल, जिसकी खेती में अधिक मात्रा में जल की जरूरत होती है, के निर्यात के बावजूद, भूजल की सतत उपलब्धता खतरे में है। इस बीच, भारत खाद्य तेलों और दालों के आयात पर बहुत अधिक निर्भर है। खाद्य सुरक्षा सुनिश्चित करने, किसानों के हितों की रक्षा करने और संसाधनों के संरक्षण के लिए, फसल नियोजन में स्थायी कृषि पद्धतियों के साथ–साथ तिलहन और दलहन जैसी जल–कुशल फसलों को प्राथमिकता देनी चाहिए।

विभिन्न बाधाओं के कारण कृषि कार्य में उपयोग न की जाने वाली 12 मिलियन हेक्टेयर चावल–परती भूमि परभारत दलहन और तिलहन की खेती का विस्तार कर सकता है। हालांकि, कम पैदावार– तिलहन में 18–40 प्रतिशत और दलहन में 31–37 प्रतिशत का अंतर – तकनीकी उन्नयन की आवश्यकता को रेखांकित करता है। विकसित कृषि संकल्प अभियान (वीकेएसए) 728 जिलों में 1.35 करोड़ किसानों तक पहुंचा, किसान–वैज्ञानिक प्रत्यक्ष बात. चीत के माध्यम से बेहतर कार्यप्रणालियों को बढ़ावा मिला। उत्पादन को बढ़ावा देने और आयात को कम करने के लिए, सरकार ने मिशन–मोड में कई योजनाएं भी शुरू की हैं, जो तिलहन, दलहन और कपास के उच्च उपज वाले बीजों पर केंद्रित हैं।

कृषि अनुसंधान में लागत कम करने और जोखिमों का प्रबंधन करते हुए उत्पादकता, सहनीयता और संसाधन दक्षता को बढ़ावा देने की अपार संभावनाएं हैं। समय पर जानकारी की बढ़ती मांग के साथ, एआई और डेटा विश्लेषण जैसे आधुनिक उपकरण वैश्विक कृषि अनुसंधान में बदलाव ला रहे हैं। भारत वर्तमान में अनुसंधान एवंविकासमें सालाना 116 बिलियन रुपये (कृषि–जीडीपी का 0.5 प्रतिशत) का निवेश करता है, इसके साथ ही वित्त पोषण बढ़ाने और मांग–आधारित दृष्टिकोण अपनाने की योजनाएं भी तैयार की गयी हैं। कृषि विज्ञान केंद्रा. , राज्य विस्तार प्रणालियों और केंद्र–राज्य समन्वय को मज़बूत करने से अनुसंधान, किसानों के साथ और भी गहराई से जुड़ सकेगा।"एक राष्ट्र, एक कृषि, एक टीम" विज़न के अंतर्गत, आईसीएआर के नोडल अधिक. ारी विकसित भारत को समर्थन देने के लिए राज्य स्तरीय कार्य योजनाओं का मार्गदर्शन कर

घर पर बनाएं हेल्दी और टेस्टी ड्राई फ्रूट्स लड्डू, नोट कर लें रेसिपी

अनन्या मिश्रा

हमारे भारत में कई तरह की डिशेज बनाई जाती हैं। स्पाइसी फूड्स से लेकर स्वीट डिश तक आपको कई वैरायटी मिल जाएंगे। भारतीय किचन में मौजूद मसाले खाने का भी स्वाद बढ़ाते हैं। वहीं ड्राई फ्रूट्स भी सेहत के लिए वरदान से कम नहीं होते हैं। इनमें सभी तरह के पोषण मौजूद होते हैं। अधिकतर लोग इसका खाली पेट सादा खाते हैं। तो वहीं कुछ लोग सब्जियों या पुलाव में भी इसका इस्तेमाल करते हैं। वहीं आप चाहें तो ड्राई फ्रूट्स के लड्डू भी बना सकती हैं। इनका स्वाद भी बहुत जबरदस्त होता है। आप इन लड्डू को लंच या डिनर के बाद स्वीट डिश के तौर पर भी खा सकती हैं।

आप ड्राई फ्रूट्स वाले लड्डू को दूध के साथ भी ले सकती हैं। यह आपकी सेहत के लिए अधिक फायदेमंद होगा। ऐसे में आज इस आर्टिकल के जरिए हम आपको ड्राई फ्रूट्स के लड्डू बनाने की रेसिपी के बारे में बताने जा रहे हैं।

सामग्री

खजूर बीज निकाले हुए एक कप

काजू आधा कप

बादाम आधा कप

अखरोट आधा कप

पिस्ता दो टेबलस्पून

किशमिश दो टेबलस्पून

घी एक से डेढ़ टेबलस्पून

सूखा नारियल कद्दूकस किया हुआ दो टेबलस्पून

इलायची पाउडर आधा टीस्पून

ऐसे बनाएं लड्डू

यह लड्डू बनाने के लिए सबसे पहले काजू, अखरोट, बादाम और पिस्ता को छोटे–छोटे टुकड़ों में काट लें या फिर हल्का दरदरा पीस लें।

फिर खजूर और किशमिश को भी बारीक काट लें।

अब एक पैन में घी गर्म कर लें और ड्राई फ्रूट्स को धीमी आंच पर हल्का सुनहरा होने तक भूनें।

फिर इसको एक प्लेट में निकाल लें।

इसके बाद उसी पैन में थोड़ा सा घी डालकर कटे हुए खजूर को डालें।

इसको दो मिनट तक भूनें, जब तक खजूर नरम न हो जाए।

अब इसी पैन में ड्राई फ्रूट्स, किशमिश और इलायची पाउडर डालकर अच्छे से मिक्स करें।

फिर इसको ठंडा होने के लिए रख दें।

इसके बाद हाथों में थोड़ा सा घी लगाकर छोटे–छोटे लड्डू बना लें।

फिर लड्डू के ऊपर से नारियल का बुरादा लगाएं या फिर एक–एक पिस्ता लगाएं।

ड्राई फ्रूट लड्डू खाने के फायदे

बिना चीनी के नेचुरल मिठास मिलती है।

इन लड्डू को खाने से फौरन एनर्जी मिलती है।

यह लड्डू बच्चों और बड़ों दोनों के लिए फायदेमंद होती है।

ड्राई फ्रूट लड्डू खाने से हड्डियां भी मजबूत होती हैं।

भारत के हथकरघा: विरासत बुन रहे हैं, भविष्य को सशक्त बना रहे हैं

(माननीय वस्त्र राज्य मंत्री श्री पबित्रा मार्गेरिटा द्वारा 11वें राष्ट्रीय हथकरघा दिवस के अवसर पर लिखा गया लेख)

हर साल 7 अगस्त को राष्ट्रीय हथकरघा दिवस एक ऐसे क्षण का प्रतीक है जो भारत के अतीत को उसके भविष्य से धागे–दर–धागा, कहानी–दर–कहानी जोड़ता है। यह दिन 1905 के स्वदेशी आंदोलन का स्मरण कराता है, जब हाथ से बुना कपड़ा न केवल एक वस्त्र के रूप में, बल्कि प्रतिरोध, आत्मनिर्भरता और सांस्कृतिक पहचान के एक सशक्त प्रतीक के रूप में उभरा। एक नई शुरुआत के रूप में प्रारंभ हुआ यह प्रतीक विरासत, कला और सामुदायिक अभिव्यक्ति के ताने–बाने में बदल गया।

हथकरघा क्षेत्र आज ग्रामीण और अर्ध–शहरी भारत में 35 लाख से अधिक बुनकरों और संबद्ध श्रमिकों को रोजगार देता है, जिनमें से 72 प्रतिशत महिलाएँ हैं। अपनी समृद्धि के कारण, यह क्षेत्र अब एक ऐसे दौर में खड़ा है, जहाँ इसे बिना किसी कमी के नवाचार, बिना किसी अभाव के तकनीक और बिना किसी हाशिए के आधुनिकीकरण की आवश्यकता है।

एक स्थायी विरासत

भारत में हथकरघा बुनाई की समृद्ध विरासत हड़प्पा और मोहनजोदड़ो की प्राचीन सभ्यताओं से जुड़ी है। सहस्राब्दियों से, यह शिल्प फलता–फूलता रहा है और प्रत्येक क्षेत्र ने बुनाई, विशिष्ट तकनीकों, रूपांकनों और अर्थों का अपना तौर–तरीका विक. सित किया है। असम के मुगा रेशम की सुनहरी चमक से लेकर प्रसिद्ध बनारसी रेशमी साड़ियों तक; कश्मीर की पश्म. ीना से लेकर तमिलनाडु की चमकदार कांजीवरम साड़ियों तक, भारत की हथकरघा परंपराएँ उतनी ही विविध हैं, जितने इसके लोग।

एक बुनकर के घर में, जहाँ करघा अक्सर रसोई या एक तरफ के "आँगन" के साथ जगह साझा करता है, प्रत्येक साड़ी या शॉल एक अनोखी कथा को संप्रेषित करने के लिए तैयार की जाती है। न्यूनतम तकनीक, लेकिन अधिकतम रचनात्मकता के साथ, बुनकर धागों को विरासत में बदल देते हैं। बिना सिले हुए कपड़े, जो भारतीय परिधानों के प्रतीक हैं, क्षेत्रीय अभिव्यक्ति, अनुष्ठानों और कहानी कहने के कैनवास बन गए हैं। हमारे माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के शब्दों में, "हथकरघा भारत की विविधता और अनगिनत बुनकरों व कारीगरों की कुशलता को दर्शाता है।"

पूर्वोत्तर: अवसरों का एक करघा

देश के कुल हथकरघा श्रमिकों में से लगभग 52 प्रतिशत पूर्वोत्तर क्षेत्र में निवास करते हैंऔर 2019–20 की हथकरघा जनगणना के अनुसार, असम 12.83 लाख से अधिक बुनकरों और 12.46 लाख करघों के साथ देश में अग्रणी है। "असम का मैनचेस्टर" कहा जाने वाला सुआलकुची, पारंपरिक बुनाई उत्कृष्टता का प्रमाण है, जबकि धेमाजी जिले में मचखोवा जैसे विकासशील केंद्र इस क्षेत्र को और बढ़ावा देते हैं।

इसके सांस्कृतिक महत्व को समझते हुए, पूर्वोत्तर के लिए सरकार का समर्पित मिशन आदिवासी बुनाई को बढ़ावा देने, हथकरघा पर्यटन को प्रोत्साहित करने, निर्यात को सुविधाजनक बनाने और युवाओं को प्रशिक्षित करने पर केंद्रित है। इस क्षेत्र को एक वैश्विक डिज़ाइन केंद्र के रूप में स्थापित किया जा रहा है, जहाँ प्राकृतिक रेशे, प्राचीन ज्ञान और आधुनिक उद्यमिता का संगम होता है। राष्ट्रीय हथकरघा विकास कार्यक्रम (एनएचडीपी) के अंतर्गत, पूर्वोत्तर राज्यों के 123 छोटे समूहों को वित्तीय सहायता प्रदान की गई है।

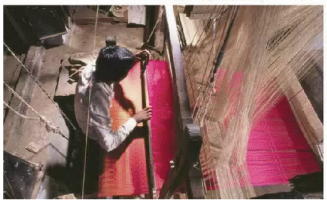

शिवसागर में एक बड़ा हथकरघा समूह स्थापित किया गया है तथा इम्फाल पूर्व और सुआलकुची में ऐसी दो परियोजनाएँ चल रही हैं। इस क्षेत्र में लगभग 3.08 लाख बुनकरों ने प्रधानमंत्री जीवन ज्योति बीमा योजना (पीएमजेजेबीवाई) और प्रधानमंत्री सुरक्षा बीमा योजना (पीएमएसबीवाई) के अंतर्गत सार्वभौमिक एवं किफायती सामाजिक सुरक्षा के लिए नामांकन कराया है, जिनमें असम के 1.09 लाख बुनकर शामिल हैं।

पुनरुद्धार से पुनरुत्थान तक

पिछले 11 वर्षों में, वस्त्र मंत्रालय के कई विशिष्ट कार्यक्रमों के जरिये भारत के हथकरघा उद्योग में उल्लेखनीय सुधार हुआ है। समूह विकास पहलों, आधुनिक उपकरणों और ऋण तक पहुँच ने बुनाई को घरेलू गतिविधियों से सूक्ष्म उद्यमों में बदलने में मदद की है।

राष्ट्रीय हथकरघा विकास कार्यक्रम (एनएचडीपी) और कच्चा माल आपूर्ति योजना (आरएमएसएस) ने सूत की आपूर्ति, करघा उन्नयन, कार्य शेड निर्माण से लेकर आधुनिक उपकरणों तक पहुँच प्रदान करके शुरू–से–अंत तक सहायता सुनिश्चित की है। पीएमजेजेबीवाई और पीएमएसबीवाई जैसी योजनाआ. े से अत्यंत आवश्यक वित्तीय और सामाजिक सुरक्षा मिली है। बुनकरों की मुद्रा योजना के तहत रियायती ऋण और अति. रिक्त राशि (मार्जिन मनी) सहायता ने कार्यशील पूंजी तक पहुँच का विस्तार किया है।

बुनकरों और उद्यमियों के लिए लागत कम करने और उत्पादकता बढ़ाने के उद्देश्य से, उच्च क्षमता वाले क्षेत्रों में हथकरघा पार्क स्थापित करने की योजना है। इन एकीकृत स्थानों में रंगाई इकाइयाँ, तुरंत शुरू करने योग्य (प्लग–एंड–प्ले) कार्यशालाएँ, डिजिटल प्रयोगशालाएँ, शोरूम तथा सौर ऊर्जा एवं अपशिष्ट पुनर्चक्रण जैसी सतत संरचनाएँ शामिल होंगी।

साथ ही, निफ्ट, एनआईडी और अन्य डिज़ाइन संस्थानों के साथ साझेदारी में क्षेत्रीय स्तर पर डिज़ाइन और नवाचार केंद्र स्थापित किए जा रहे हैं, जहाँ डिज़ाइनर और बुनकर बुनाई के पारंपरिक सार का सह–निर्माण, संरक्षण और दस्तावेज़ीकरण करेंगे, और सांस्कृतिक डिज़ाइनों का ऑनलाइन संग्रह तैयार करेंगे। ये अभिनव कार्यक्रम वैश्विक स्तर पर भारतीय हथकरघा के सौंदर्य और व्यावसायिक आकर्षण, दोनों को बढ़ाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाएंगे।

तकनीक को अपनाना ज़रूरी है, लेकिन हथकरघा की आत्मा अक्षुण्ण रहनी चाहिए। अब एआई का उपयोग रुझानों की भविष्यवाणी और डिजिटल रंग चयन के लिए किया जा रहा है, जबकि ब्लॉकचेन उत्पाद का पता लगाना सुनिश्चित करता है और जालसाजी का मुकाबला करते हुए इस क्षेत्र को नए डिजिटल युग में ज़िम्मेदारी से आगे बढ़ाता है।

संयोजन की पुनर्कल्पना: ई–कॉमर्स और बाज़ार पहुँच

विपणन और ई–कॉमर्स गेम–चेंजर के रूप में कार्य करेंगे। रणनीति सरल लेकिन क्रांतिकारी है: बिचौलियों को खत्म करना, प्रचार के माध्यम से उपस्थिति बढ़ाना और बुनकरों को प्रारंभ से ही मंचों, प्रदर्शनियों और बाज़ारों से सीधे जोड़ना। इसी क्रम में, हथकरघा बुनकरा. े को सरकारी ई–मार्केटप्लेस (जेम) से जोड़ा जा रहा है और पदकपींदकउंकम.बवउ एक पारदर्शी, शून्यकमीशन वाला मंच प्रदान कर रहा है, जो उचित पारिश्रमिक, वस्तु को एक स्थान से दूसरे स्थान तक भेजने की निःशुल्क व्यवस्था, आसान वापसी और सुरक्षित भुगतान विकल्प सुनिश्चित करता है।

इन प्रयासों के पूरक के रूप में, 106 हथकरघा उत्पादों को पहले ही भौगोलिक संकेत (जीआई) टैग प्रदान किए जा चुके हैं, जो उनकी अनूठी क्षेत्रीय विरासत और शिल्प कौशल का सम्मान करते हैं। 'हथकरघा चिह्न' और 'भारतीय हथकरघा ब्रांड' के साथ, ये उपाय हाथ से बुने हुए उत्पादों की विशिष्ट पहचान को मज़बूत करते हैं, और खरीदारों को उनकी प्रामाणिकता, गुणवत्ता और पर्यावरण–अनुकूलता का आश्वा. सन देते हैं।

कौशल, सुरक्षा और स्थायित्व

आने वाला कल समावेशी क्षमता निर्माण पर निर्भर करता है। विशेष रूप से पारंपरिक तकनीकों के संरक्षण की दृष्टि से युवाओं के लिए कौशल विकास कार्यक्रम, वित्तीय और सामाजिक सुरक्षा योजनाओं के साथ जोड़े गए हैं – जिनमें स्वास्थ्य बीमा, शैक्षिक छात्रवृत्ति और बुनकरों के लिए पेंशन लाभ शामिल हैं।

साथ ही, पर्यावरण–अनुकूल रंग, कार्बन उत्सर्जन न करने वाले उत्पादन मॉडल और जीवन–चक्र मूल्यांकन इस क्षेत्र की स्थायित्व के प्रति प्रतिबद्धता को सुदृढ़ करते हैं, और भारतीय हथकरघा को वैश्विक हरित आंदोलन के साथ जोड़ते हैं। वस्त्र मंत्रालय के सहयोग से आईआईटी दिल्ली द्वारा तैयार की गई "भारतीय हथकरघा क्षेत्र में कार्बन उत्सर्जन आकलन: विधियाँ और केस स्टडीज़" शीर्षक वाली नई रिपोर्ट, एक संदर्भ और मार्गदर्शिका दोनों का काम करती है, जो भारत के लिए अधिक स्थायी संस्करण का मार्ग प्रशस्त करती है। पारंपरिक हथकरघा प्रथाओं में पर्यावरणीय चेतना को समाहित करके, यह अध्ययन सतत विकास लक्ष्यों (एसडीजी) के प्रति वस्त्र मंत्रालय की प्रतिबद्धता को पुष्ट करता है। इससे यह भी सुनिश्चित होता है कि हथकरघा मूल्य श्रृंखला न केवल जलवायु–सहनीय हो, बल्कि नैतिक उत्पादन, समान मजदूरी और सम्मानजनक आजीविका पर भी आधारित हो।

भविष्य का मार्ग: सतत, समर्थन, पैमाना

भारत के हथकरघा क्षेत्र का दृष्टिकोण आंशिक रूप से सांस्कृतिक, आंशिक रूप से कृत्रिम बुद्धिमत्ता आधारित और पूरी तरह से मानवीय है। महत्वाकांक्षी लक्ष्यों में निर्यात में वृद्धि, नए रोजगार सृजित करना और विभिन्न समूहों के बुनकरा. े को डिजिटल साक्षरता प्रशिक्षण प्रदान करना शामिल है। भविष्य तीन स्तंभों पर टिका है: आत्मा को बनाए रखना, निर्माता का समर्थन करना और पहुँच का विस्तार करना।

पारिश्रमिक से आगे बढ़ते हुए, इस क्षेत्र का उद्देश्य फेलोशिप, स्टार्टअप अनुदान और इनक्यूबेशन केंद्रों के माध्यम से उद्यमिता को बढ़ावा देना है तथा विशेष रूप से अग्रणी युवाओं और महिलाओं को प्रोत्साहित करना है। ब्रांडिंग, मार्गदर्शन व सहायता और व्यवसाय विकास सहायता स्वामित्व–आधारित उद्यमों को बढ़ावा देगी, जो सांस्कृतिक रूप से प्रामाणिक और व्यावसायिक रूप से व्यावहारिक दोनों होंगे।

भारत का हथकरघा क्षेत्र निरंतर विकसित हो रहा है...

हथकरघा 2047 तक विकसित भारत की ओर हमारी यात्रा में एक प्रमुख प्रेरक शक्ति बना हुआ है, साथ ही देश के सांस्कृतिक लोकाचार को संरक्षित कर रहा है और स्थायित्व एवं विवेकपूर्ण उपभोग को बढ़ावा दे रहा है। प्रतिरोध के एक साधन से नवाचार के एक प्रकाश स्तंभ तक की यात्रा, हथकरघा के कालातीत महत्व को दर्शाती है, जो आने वाले युगों में एक शाश्वत छाप छोड़ती है। विरासत, नवाचार औरसामूहिक प्रयास को एक साथ बुनकर, भारत का हथकरघा क्षेत्र दुनिया को प्रेरित करने और देश में लाखों लोगों को सशक्त बनाने के लिए तैयार है।

जैसा कि हमारे माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी ने परिकल्पना की है, "आइए हम हथकरघा को अपने दैनिक जीवन का एक महत्वपूर्ण हिस्सा बनाएँ और अपने पारंपरिक हथकरघा उत्पादों को वह दर्जा दें, जिसके वे हकदार हैं।"

Created by Universal Document Converter

एम एस स्वामीनाथन ने देश को अन्न संकट से निकाल बनाया था आत्मनिर्भर

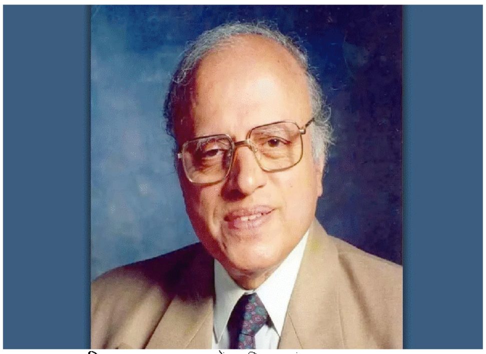

अनन्या मिश्रा

हरित क्रांति के जनक एम एस स्वामीनाथन का 07 अगस्त को जन्म हुआ था। एम एस स्वामीनाथन एक मशहूर कृषि वैज्ञानिक थे। उनको फादर ऑफ ग्रीन रेवोल्यूशन भी कहा जाता है। बताया जाता है कि साल 1960 में जब भारत अनाज की कमी से जूझ रहा था, तब एम एस स्वामीनाथन आगे आए थे और उन्होंने देश को अनाज के मामले में आत्मनिर्भर बना दिया। तो आइए जानते हैं उनकी बर्थ एनिवर्सरी के मौके पर एम एस स्वामीनाथन के जीवन से जुड़ी कुछ रोचक बातों के बारे में...

जन्म और परिवार

तमिलनाडु में 07 अगस्त 1925 में एमएस स्वामीनाथन का जन्म हुआ था। उनका पूरा नाम मनकोम्बु संबाशिवन स्वामीनाथन था। साल 1972 और 1979 के बीच डॉ. स्वामीनाथन ने भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद के महानिदेशक बने। वहीं उन्होंने भारत सरकार में कृषि अनुसंधान और शिक्षा विभाग के सचिव के तौर पर भी काम किया था।

भारतीय हरित क्रांति के जनक की मिली उपाधि

स्वामीनाथन के काम से कृषि और गेंहू की खेती समेत अन्य उत्पादन में बेतहाशा वृद्धि हुई। इससे भारत जोकि भोजन की कमी वाला देश बन रहा था, वह देश आत्मनिर्भर राष्ट्र में तब्दील हो गया। जिस कारण एम एस स्वामीनाथन को 'भारतीय हरित क्रांति के जनक' की उपाधि से नवाजा गया।

प्रतिष्ठित पुरस्कार

कृषि जगत में एमएस स्वामीनाथन को अहम योगदान के कारण कई प्रतिष्ठित पुरस्कारों से नवाजा गया है। जिनमें से साल 1971 में सामुदायिक नेतृत्व के लिए स्वामीनाथन को 'रेमन मैग्सेसे पुरस्कार' और साल 1987 में विश्व खाद्य पुरस्कार से सम्मानित किया गया। वहीं साल 1967 में पद्मश्री और साल 1972 में पद्म भूषण और 1989 में पद्म विभूषण से नवाजा गया।

स्वामीनाथन रिपोर्ट

राष्ट्रीय किसान आयोग के अध्यक्ष के तौर पर डॉ स्वामीनाथन ने किसानों की परेशानियां दूर करने में अहम भूमिका निभाई। उन्होंने किसानों को फसल की औसत लागत से कम से कम 50 प्रतिशत अधिक डैच निर्धारित करने की सिफारिश की थी। जिसको स्वामीनाथन रिपोर्ट कहा गया था।

राज्यसभा सांसद

चेन्नई में डॉ स्वामीनाथन ने एमएस स्वामीनाथन रिसर्च फाउंडेशन में इकोटेक्नोलॉजी में यूनेस्को की कुर्सी संभाली। यहां पर स्वामीनाथन का काम सस्टेनेबल एग्रीकल्चर प्रैक्टिसेस को जारी रखना था। वहीं साल 2007 और 2013 के बीच स्वामीनाथन को सांसद के तौर पर राज्यसभा के लिए नामित किया गया था।

मृत्यु

वहीं 28 सितंबर 2023 को 98 वर्ष की आयु में एमएस स्वामीनाथन का निधन हो गया।

नोबेल जीतने वाले पहले एशियाई थे रबींद्रनाथ टैगोर, इन देशों को दिया था राष्ट्रगान

अनन्या मिश्रा

भारत और बंगाल के बहुमखी प्रतिभा संपन्न विद्वान गुरुदेव रबींद्रनाथ टैगोर का 07 अगस्त को निधन हो गया था। रबींद्रनाथ टैगोर एक लेखक, कवि, नाटककार, संगीतकार, चित्रकार, दार्शनिक और समाज सुधारक थे। उन्होंने बंगाल के अलावा भारतीय संस्कृति, संगीत और कला को नए आयाम देने का काम किया था। उनकी रचनाएं न सिर्फ देश बल्कि यूरोप में भी पसंद की जाती थीं। वह साहित्य के लिए नोबेल पुरस्कार पाने वाले पहले गैर यूरोपीय बने थे। तो आइए जानते हैं उनकी डेथ एनिवर्सरी के मौके पर रबींद्रनाथ टैगोर के जीवन से जुड़ी कुछ रोचक बातों के बारे में...

जन्म और परिवार

कोलकाता के जोड़ासाको ठाकुरबाड़ी में 07 मई 1861 को रबींद्रनाथ टैगोर का जन्म हुआ था। इनके पिता देवेंद्रनाथ अक्सर यात्राओं पर रहते थे। ऐसे में इनका पालन-पोषण नौकरों ने किया था। इन्होंने संेट

जेवियर में शिक्षा हासिल की और बैरिस्टर की पढ़ाई के लिए इंग्लैंड चले गए। जहां पर उन्होंने ब्रिजस्टोन पब्लिक स्कूल के बाद लंदन यूनिवर्सिटी में कानून की पढ़ाई की। लेकिन रबींद्रनाथ टैगोर बिना डिग्री लिए वापस भारत आ गए।

लेखन और काव्य

बता दें कि महज 8 साल की उम्र में रबींद्रनाथ ने पहली कविता लिखी थी। वहीं 16 साल की उम्र में उनकी कविता का संकलन छपा था। फिर उन्होंने छोटी कहानियों और नाटकों का संकलन अपने नाम से छपवाया।

रबींद्रनाथ टैगोर की रचनाओं ने बांग्ला साहित्य को नई ऊंचाइयां दीं, जिसमें गोरा, गीतांजली और घरे बाइरे काफी फेमस रहीं।

संगीत से नाता

रबींद्रनाथ टैगोर ने भारत और बांग्लादेश का राष्ट्रगान लिखा और उसको संगीतबद्ध किया है। इसके अलावा श्रीलंका का राष्ट्रगान भी टैगोर की रचना से प्रेरित है। लेखन के अलावा रबींद्रनाथ ने अपने लिखे करीब 2230 गीतों को संगीतबद्ध किया है। जिसको रबींद्र संगीत के नाम से भी जाना जाता है।

स्वामी विवेकानंद के बाद रबींद्रनाथ टैगोर दूसरे ऐसे व्यक्ति हैं, जिन्होंने विश्व धर्म संसद को संबोधित किया। उन्होंने ऐसा दो बार किया था। रबींद्रनाथ टैगोर को महात्मा गांधी ने गुरुदेव की उपाधि दी थी। गांधी से वैचारिक मतभेदों पर रबींद्रनाथ टैगोर काफी मुखर थे, वहीं महात्मा गांधी भी उनका काफी सम्मान करते थे।

मृत्यु

अपने जीवन से अंतिम दिनों में रबींद्रनाथ टैगोर प्रोस्टेट कैंसर से पीड़ित थे। वहीं 07 अगस्त 1941 में रबींद्रनाथ टैगोर का निधन हो गया था।

शरीर में कैल्शियम की कमी को दूर करने में मदद कर सकते हैं ये बीज

मिताली जैन

कैल्शियम शरीर के लिए जरूरी मिनरल्स में से एक है। यह हड्डियों की मजबूती को बनाए रखने में मददगार है। लेकिन आज के समय में बच्चों से लेकर बड़ों तक कैल्शियम की कमी से जूझ रहे हैं। ऐसे में ना केवल जोड़ों में दर्द की समस्या का सामना करना पड़ता है, बल्कि हड्डी के फ्रैक्चर होने का खतरा भी बढ़ जाता है। अमूमन देखने में आता है कि जब शरीर में कैल्शियम की कमी हो जाती है तो अधिकतर लोग सप्लीमेंट्स पर ज्यादा निर्भर रहने लगते हैं। हालांकि, अगर आप अपनी डाइट पर ध्यान दें तो शायद आपको सप्लीमेंट्स का सहारा ना लेना पड़े।

जी हां, ऐसे कई बीज होते हैं, जो कैल्शियम रिच होते हैं। इसलिए, जब इन्हें डाइट में शामिल किया जाता है तो इससे कैल्शियम की कमी को दूर करने में मदद मिलती है। ये छोटे-छोटे बीज ना सिर्फ आपकी हड्डियों को मज़बूत बनाते हैं, बल्कि पाचन सुधारने, हार्मोन बैलेंस करने और बाला.

व स्किन की सेहत का ख्याल रखने में भी मदद करते हैं। तो चलिए आज इस लेख में हम आपको ऐसे ही कुछ कैल्शियम रिच बीजों के बारे में बता रहे हैं–

तिल के बीज

जब कैल्शियम रिच बीज की बात हो तो तिल के बीज का नाम सबसे पहले दिमाग में आता है। बता दें कि 100 ग्राम तिल में लगभग 975–1000 एमजी कैल्शियम होता है। इस लिहाज से यह आपके लिए दूध से भी ज्यादा फायदेमंद है। इतना ही नहीं इसमें मैग्नीशियम और फॉस्फोरस भी होता है, जो कैल्शियम को अच्छे से सोखने में मदद करता है। आप हर दिन 1–2 छोटी चम्मच तिल पाउडर या भुना हुआ तिल ले सकते हैं। चूंकि यह गर्म होता है, इसलिए गर्मियों में इसका सेवन ज़्यादा न करें।

चिया सीड्स

चिया सीड्स भी कैल्शियम की कमी को दूर करने में सहायक साबित हो सकता है। दरअसल, 100 ग्राम चिया सीड्स में लगभग 630 एमजी कैल्शियम होता है। इतना ही नहीं, इसमें ओमेगा–3 और फाइबर भी पाया जाता है। यह हड्डियों को मजबूती देने के साथ–साथ पेट को साफ रखने में मददगार है। साथ ही, इससे आपको लंबे समय तक एनर्जी भी मिलती है। आप एक बड़ा चम्मच भीगे हुए चिया सीड्स को अपनी डाइट का हिस्सा बना सकते हैं।

अलसी के बीज

अलसी के बीजों में अपेक्षाकृत कैल्शियम कम पाया जाता है। 100 ग्राम अलसी के बीज में लगभग 255 एमजी कैल्शियम होता है। साथ ही साथ, इसमें ओमेगा–3 और फाइटोएस्ट्रोजेन पाया जाता है, जिसकी वजह से इसे महिलाओं के लिए काफी अच्छा माना जाता है। यह हार्मोन बैलेंस करने के साथ–साथ पीसीओडी, मेनोपॉज और थायरॉइड में भी फायदेमंद है। आप एक छोटी चम्मच भूनी हुई अलसी पाउडर को अपनी डाइट का हिस्सा बनाएं।

दलबदलू का दरिद्र दरबार (व्यंग्य)

डॉ. सुरेश कुमार मिश्रा 'उरतृप्त'

पुराने शहर के चौपालगंज में एक अजीब सी खलबली मची हुई थी। चुनाव अभी दूर थे, लेकिन दो प्रमुख विचारधाराओं के बीच एक अदृश्य, भयंकर युद्ध छिड़ा हुआ था। एक ओर थे 'पुरानी–खोपड़ी–पार्टी' के लोग, जो कहते थे कि 'सत्य सनातन है और हमारे संस्कार ही इस देश की नींव है।' उनके नेता श्री रामभरोसे थे, जो धोती–कुर्ता पहनकर, माथे पर चंदन लगाकर घूमते थे और हर बात पर 'पहले हमारे ज़माने में' कहकर लंबी–चौड़ी भाषणबाजी करते थे। दूसरी ओर थे 'फॉरवर्ड–थिंकिंग–फ्रंट' के नौजवान, जो जींस और टी–शर्ट पहनकर, मोबाइल की स्क्रीन पर देश का भविष्य तलाशते थे। उनके नेता मिस सिमरन थीं, जो हर बात में 'डेटा', 'एल्गोरिदम' और 'ग्लोबल–इकोनॉमी' जैसे शब्द ठूंस देती थीं। दोनों दलों के बीच काफी कड़वाहट थी। रामभरोसे कहते, "यह नई पीढ़ी तो हमारी संस्कृति का मज़ाक उड़ा रही है।" और सिमरन का जवाब होता, "इन पुरानी खोपड़ियों में नए विचार घुसते ही नहीं।" इस सब के बीच एक तीसरा पात्र था, जिसका नाम था 'ट्विंकल'। वैसे तो उसका असली नाम सुरेश था, लेकिन लोग उसे 'ट्विंकल' इसलिए कहते थे, क्योंकि वह तारों की तरह कभी इस दल में तो कभी उस दल में चमकता रहता था। वह कभी रामभरोसे के साथ बैठकर 'आदर्शों' की बातें करता तो कभी सिमरन के साथ पिज्जा खाते हुए 'मॉडर्न–अप्रोच' का दम भरता। ट्विंकल की ज़िंदगी का एक ही उसूल था: जिस ओर हवा, उसी ओर छतरी। उसे समझ नहीं आ रहा था कि इस विचारधारा के युद्ध में वह किसके साथ जाए। वह दोनों दलों के मंचों के बीच एक अजीबोगरीब मुद्रा में खड़ा था, जैसे दो नावों पर पैर रखने वाला सर्कस का कलाकार।

ट्विंकल की इस बेचैनी को देखकर सबसे पहले पुरानी–खोपड़ी–पार्टी के लोग उसके पास आए। रामभरोसे ने अपनी मोटी आवाज़ में कहा, "अरे ट्विंकल बेटा, तुम तो हमारे परिवार के ही हो। हमारे संस्कारों को तुम ही तो आगे बढ़ाओगे। आओ, हमारे दल में शामिल हो जाओ।" यह सुनकर ट्विंकल ने अपनी आंखों में नकली आंसू भर लिए और हाथ जोड़कर बोला, "रामभरोसे चाचा, मै आपका ही हूं लेकिन आप मेरी हालत देखिए। मेरे दोस्त, मेरे रिश्तेदार, सब तो फॉरवर्ड–थिंकिंग–फ्रंट के साथ हैं। अगर मैं आपके साथ आ गया, तो मेरे "जे।चच ग्रुप्स से मुझे निकाल दिया जाएगा। मेरी सोशल मीडिया पर 'ट्रेंडिंग' वाली इमेज का क्या होगा? मैं तो जींस और टी–शर्ट पहनता हूं, आपके इस खादी के माहौल में एडजस्ट नहीं कर पाऊंगा।" उसकी यह बात सुनकर रामभरोसे ने अपनी मूंछों पर ताव दिया और बोले, "तुम तो हमारे ही हो, तुम्हारा दिल तो पुराना ही है, बस शरीर पर नए कपड़े हैं। आओ, तुम्हारा स्वागत है। देखो, तुम्हारे कपड़ों को देखकर कोई तुम्हें पहचान ही नहीं पाएगा, तुम हमारे खुफिया एजेंट बन जाओ।" ट्विंकल ने एक पल सोचा, फिर अपनी आंखें नचाते हुए कहा, "नहीं चाचा, यह 'फॉरवर्ड–थिंकिंग' की हवा थोड़ी ज़ोरदार है। मैं इस हवा के खिलाफ कैसे चलूंगा? आप देखिए, मेरे पास दाढ़ी नहीं है, आप तो दाढ़ी वाले को ही अपना मानते है।" यह सुनकर रामभरोसे के साथी बोले, "अरे बेटा, दाढ़ी नहीं तो क्या हुआ? दिल में दाढ़ी तो है।" यह कहकर वे हंसने लगे और ट्विंकल को और उलझन में डालकर चले गए। ट्विंकल ने सिर पकड़ लिया, उसकी चाल पकड़ी जा चुकी थी।

पुरानी–खोपड़ी–पार्टी के जाते ही, फॉरवर्ड–थिंकिंग–फ्रंट के लोग उसके पास आए। सिमरन ने अपनी उंगलियों से हवा में एक ग्राफ बनाते हुए कहा, "हे ट्विंकल, तुम तो हमारे दल के सबसे महत्वपूर्ण 'डेटा–पॉइंट' हो। आओ हमारे साथ। हम तो तुम्हें अपनी 'डिजिटल–आर्मी' का हेड बनाएंगे।" ट्विंकल ने तुरंत अपनी टी–शर्ट का कॉलर ठीक किया और बोला, "मैम, आप मेरी हालत

देखिए। मेरे दादा–परदादा तो रामभरोसे चाचा के ही समर्थक रहे हैं। मेरी पुरानी पीढ़ी का क्या होगा? मेरे घर में तो अभी भी गोबर के कंडे से खाना बनता है, और आप कहती हैं कि 'इलेक्ट्रिक–इंडक्शन' पर चलो। मै तो उनके कल्चर को भूल ही नहीं सकता।" यह सुनकर सिमरन ने अपनी आंखें सिकोड़कर कहा, "ओह, माय गॉड! तुम तो 'इमोशनल–ब्लैकमेलिंग' कर रहे हो। यह तो बहुत ही 'रेट्रो' अप्रोच है। क्या तुम 'प्रोग्रेस' नहीं करना चाहते? तुम पुराने विचारों में ही फंसकर रह जाओगे। 'डिजिटल–इंडिया' के युग में गोबर के कंडे? कितना 'आउट–ऑफ–द–बॉक्स' हो तुम!" ट्विंकल ने तुरंत अपनी मुद्रा बदली और हंसते हुए बोला, "अरे मैम, वह तो मै मज़ाक कर रहा था। आप तो मेरी 'सेंस ऑफ ह्यूमर' को समझिए।" सिमरन बोली, "तुम्हें पंख नहीं दिखते? तुम तो हमारे ही हो।" ट्विंकल ने तुरंत अपना बचाव किया, "मेरे पास तो पंख नहीं है, मैम। मै तो ज़मीन पर रहने वाला चूहा हूं जिसे आप लोग कभी 'प्रोग्रेसिव' नहीं मानेंगे।" सिमरन और उसके साथी भी हंसते हुए उसे उलझन में डालकर चले गए।

एक दिन दोनों दलों ने शहर के बीचों–बीच एक बड़ी प्रेस कॉन्फ्रेंस बुलाई। रामभरोसे और सिमरन आमने–सामने बैठे थे और ट्विंकल उन दोनों के ठीक बीच में एक 'न्यूट्रल–पॉइंट' की तरह बैठा था। एक पत्रकार ने रामभरोसे से पूछा, "रामभरोसे जी, क्या आप मानते है कि 'सोशल मीडिया' का उपयोग देश के विकास के लिए ज़रूरी है?" रामभरोसे ने जवाब दिया, "देखिए, सोशल मीडिया तो हमारी संस्कृति के लिए खतरा है, लेकिन कुछ 'ज्ञान' की बातें भी होती है, तो ठीक है।" ट्विंकल तुरंत बोला, "नहीं, नहीं, सर। सोशल मीडिया तो हमारी 'आत्मा' है। यह तो एक 'डेटा–माइनिंग' का ऐसा साधन है, जिससे हम लोगों की भावनाओं को समझ सकते हैं।" सिमरन ने मुस्कुराकर कहा, "अच्छा ट्विंकल, तुम क्या मानते हो कि 'संस्कारों' की बातें करना आज के समय में प्रासंगिक है?" ट्विंकल ने तुरंत अपनी बात पलटी और कहा, "मैम, हमारी संस्कृति ही तो हमारी पहचान है। संस्कार तो हमारी 'डीएनए' में हैं, उन्हें कोई बदल नहीं सकता।" सिमरन के चेहरे पर एक गुस्सा झलक गया। रामभरोसे ने भी उसे घूरकर देखा। ट्विंकल ने महसूस किया कि उसने दोनों दलों को एक साथ खुश करने की कोशिश में दोनों को नाराज़ कर दिया है। उसकी 'डबल–एजेंट' वाली छवि अब सबके सामने आ गई थी। उस दिन वह प्रेस कॉन्फ्रेंस में बैठा तो था, लेकिन ऐसा लग रहा था कि वह अपने ही वजूद से दूर होता जा रहा है। उसकी आंखों में एक अजीब सी उदासी थी।

कुछ दिन बाद, अचानक एक बड़ी घटना हुई। शहर के एक पुराने किले की नींव में एक प्राचीन शिलालेख मिला, जिस पर दोनों दलों की विचारधाराओं का अद्भुत समन्वय था। उसमें लिखा था कि 'संस्कार और प्रगति दोनों मिलकर ही एक शक्तिशाली समाज का निर्माण करते हैं।' इस घटना ने दोनों दलों के नेताओं को हिला दिया। रामभरोसे और सिमरन दोनों ने एक–दूसरे से हाथ मिलाया और मिलकर शहर के विकास के लिए एक नई योजना शुरू करने का फैसला किया। दोनों दलों के बीच की सारी कड़वाहट दूर हो गई और शहर में शांति का माहौल छा गया। चारों ओर खुशियां ही खुशियां थीं। लोग एक–दूसरे को गले लगा रहे थे। दोनों दलों के समर्थक एक–दूसरे के घर जाकर चाय पी रहे थे। यह देखकर ट्विंकल की आंखों में चमक आ गई। उसने सोचा, "अब मेरा समय आ गया है। अब मैं किसी भी दल में शामिल हो सकता हूं, क्योंकि अब तो दोनों एक ही है।" उसने अपनी कमर सीधी की और आत्मविश्वास के साथ चलने लगा। उसके चेहरे पर एक अजीब सी मुस्कान थी, जैसे कोई चोर चोरी करने के बाद निश्चिंत हो जाता है कि अब उसे कोई नहीं पकड़ेगा। उसे लगा कि उसकी चाल, उसका दांव अब सफल हो गया है। उसने अपने मन में सोचा, "मैं कितना होशियार हूं। जब ये दोनों लड़ रहे थे, तब मैंने इंतज़ार किया और अब जब दोनों एक हो गए हैं, तो मै इन दोनों का हिस्सा बन जाऊंगा।"

यह सोचकर ट्विंकल सबसे पहले रामभरोसे के पास गया। वह उनके चरणों में झुककर बोला, "चाचा, मुझे माफ कर दीजिए। मै उस दिन आपकी बातों को नहीं समझ पाया था। मै तो हमेशा से ही आपके साथ था, बस दुनियादारी की मजबूरी थी।" रामभरोसे ने उसे ऊपर से नीचे तक देखा और एक ठंडी सांस लेकर बोले, "बेटा, जब हमें तुम्हारी ज़रूरत थी, तब तुम 'फॉरवर्ड–थिंकिंग' की बातें कर रहे थे। जब तुम हमारे साथ नहीं थे, तब तुमने हमें अकेला छोड़ दिया था। अब जब सब ठीक हो गया है, तब तुम यहां आए हो? तुम अपने स्वार्थ के लिए हमारे पास आए हो। हम तुम्हें अपने दल में नहीं ले सकते। जिस व्यक्ति का कोई आदर्श नहीं होता, वह किसी काम का नहीं होता।" ट्विंकल की आंखों में पानी आ गया। उसे रामभरोसे की बातों में अपने ही कर्मों का प्रतिबिंब दिखाई दिया। वह चुपचाप, सिर झुकाकर वहां से चला गया। उस समय, उसके अंदर का एक हिस्सा मर गया था।

हताश होकर ट्विंकल सिमरन के पास गया। वह हाथ जोड़कर बोला, "मैम, मैं हमेशा से आपकी ही टीम का हिस्सा बनना चाहता था। मै उस दिन डर गया था। मुझे माफ कर दीजिए। मै 'न्यू एज' के विचारों के साथ ही जीना चाहता हूँ।" सिमरन ने उसे देखकर अपनी आंखों में एक कटाक्ष भरा और बोली, "ट्विंकल, जब हमें तुम्हारी ज़रूरत थी, तब तुम 'पुरानी–खोपड़ी' के आदर्शों का गुणगान कर रहे थे। अब जब हमें तुम्हारी कोई ज़रूरत नहीं है, तब तुम हमारे पास आए हो। हमारे दल में सिर्फ वही लोग रह सकते हैं, जो दिल से 'फॉरवर्ड–थिंकिंग' वाले हों। तुम एक मौकापरस्त हो, और मौकापरस्त लोगों को कोई भी दल स्वीकार नहीं करता।" सिमरन की बात सुनकर ट्विंकल का दिल टूट गया। उसे अपने ही किए पर शर्म महसूस होने लगी। वह समझ गया कि उसका असली चेहरा सबके सामने आ चुका है और अब उसे कोई भी स्वीकार नहीं करेगा। उसकी ज़िंदगी एक ऐसे चौराहे पर आकर खड़ी हो गई थी, जहां से कोई रास्ता नहीं था। वह अकेला खड़ा था।

इस घटना के बाद ट्विंकल पूरी तरह से अकेला हो गया। दोनों दलों के लोगों ने उससे बात करना बंद कर दिया। उसके दोस्त, जो कभी उसके साथ थे, अब उसे देखकर रास्ता बदल लेते थे। वह चौपालगंज में अकेला ही घूमता रहता था, जैसे कोई भूत। उसके पास न तो 'पुरानी–खोपड़ी' के संस्कार थे, न ही 'फॉरवर्ड–थिंकिंग' की कोई 'प्लानिंग'। वह दोनों दुनियाओं के बीच में फंसा एक ऐसा पात्र बन गया था, जिसका कोई वजूद नहीं था। एक रात, वह अपनी बालकनी में अकेला बैठा चांद को देख रहा था। उसकी आंखों से आंसू टपक रहे थे, और उसे अपने स्वार्थ के अलावा कुछ भी दिखाई नहीं दे रहा था। वह आज़ाद तो था, लेकिन इस आज़ादी में सिर्फ अकेलापन था। उसके होंठों से एक आह निकली, "काश, मैंने किसी एक दल के साथ पूरी ईमानदारी से काम किया होता। आज मैं किसी का तो होता।" उसका दिल टूट गया था। उसकी आत्मा कांप रही थी।

Created by Universal Document Converter

चीन ने रेयर अर्थ मिनिरल्स से डराया, ट्रंप की चुनौती से रियल एस्टेट के सहारे निपटेगा भारत? जिससे बना लिए एक साल में 175 करोड़

अभिनय आकाश

बिनय न मानत जलधि जड़ गए तीनि दिन बीति। बोले राम सकोप तब भय बिनु होइ न प्रीतिः प्रभु राम जिन्हें विनम्रता और सदाचारी कहा जाता है उन्हें भी एक बार क्रोध आ गया था। रामचरित मानस के अनुसार लंका पर चढ़ाई के लिए सेतु निर्माण आवश्ध्यक था। इसके लिए भगवान श्री राम अपने भ्राता लक्ष्मण के साथ तीन दिन तक समुद्र से रास्ता देने की प्रार्थना करते रहे। लेकिन समुद्र नहीं माना। तब भगवान श्री राम ने क्रोध में कहा था कि आप लोककल्याण के मार्ग को भूलकर, अत्याचार के मार्ग पर जा चुके हैं। इसलिए आपका विनाश आवश्यक है। उनके ऐसा निश्चय करते ही समुद्र देवता थर–थर कांपने लगते हैं तथा प्रभु श्री राम से शांत होने की प्रार्थना करते हैं। ताकत के बल पर शांति लाने की बात ट्रंप भी अक्सर करते नजर आते हैं। लेकिन ट्रंप की इस नीति में थोड़ा विरोधाभास इसलिए भी नजर आता है क्योंकि ताकत के बल पर वो जब किसी को डरा या झुका नहीं पाते तो मुद्दा ही बदल देते हैं। 2018 में डोनाल्ड ट्रंप ने अमेरिका को ईरान न्यूक्लियर डील से अलग किया। जिससे डील काम की नहीं रह गई। ईरान पर लगे प्रतिबंध फिर से लग गए। तेल निर्यात पर प्रतिबंध लगा तो बड़े देशों जिसमें हिंदुस्तान भी शामिल है ईरान से तेल लेना बंद किया। बाद में कोरोना महामारी का दौर और ईरान का तेल निर्यात खत्म हो गया। लेकिन धीरे धीरे ईरान ने इससे तेल बेचने का तरीका निकाला। ईरान ने नार्थ कोरिया को तेल दिया और बदले में हथियार लिए। 2024 में ईरान के तेल मंत्री ने कहा कि उनका देश 17 देशों को तेल बेचता है। ईरानी तेल का सबसे बड़ा आयातक इन दिनों चीन है। चीन इन दिनों अपने तेल खरीद का लगभग 15 प्रतिशत ईरान से ही लेता है। फ्रंट पॉलिसी मैगजीन के मुताबिक ईरान इन दिनों चीन को करीब 20 लाख बैरल प्रतिदिन कच्चा तेल देता है। जून 2025 में जब अमेरिका और इजरायल ईरान पर बमबारी कर रहे थे। तब ईरान के ऑयल एक्सपोर्ट पर कोई प्रभाव नहीं पड़ा बल्कि उस दौरान ईरान ने और तेल का निर्यात किया। इजरायल चाहता था कि वो ईरान के गैस और ऑयल प्रोडक्शन पर हमला करे। लेकिन ट्रंप ने ऐसा करने से मना कर दिया। इसका मतलब है कि ट्रंप को इस धंधे की पूरी जानकारी थी और वो इस रिस्क को समझते थे कि चीन की सप्लाई को सीधा निशाना बनाने पर क्या होगा।

यही बात रूसी तेल के

लिए भी लागू होती है। रूस और ईरान के सबसे बड़े तेल का खरीदार चीन है। चीन को ट्रंप ने 90 दिन की मोहलत दी क्योंकि चीन अमेरिका को अपने रेयर अर्थ मिनिरल रोकने की धमकी दे रहा है। भारत को भी ऐसा कोई दबाव अमेरिका पर बनाने की रणनीति अपनानी होगी। क्या हो सकती है वो रणनीति इसका तो पता नहीं। लेकिन इंडियन एक्सप्रेस ने 6 अगस्त को एक रिपोर्ट प्रकाशित की है। इस रिपोर्ट में बताया गया है कि जिस भारत को ट्रंप डेड इकोनॉमी कह रहे हैं। उसी में कई बड़े बिल्डरों के साथ मिलकर मुंबई, पुणे, गुरुग्राम, कोलकाता में प्रॉपर्टी खरीदी है।

भारत में कैसे चलता है ट्रंप का बिज़नेस?

अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने भले ही भारत को एक "डेड इकोनॉमी" बताते हैं। लेकिन उनके परिवार द्वारा नियंत्रित द ट्रंप ऑर्गनाइज़ेशन के लिए भारत पिछले 10 वर्षों में अमेरिका के बाहर सबसे बड़ा बाज़ार है। उपलब्ध रिकॉर्ड के अनुसार, पिछले साल तक इसने कई शीर्ष बिल्डरों के साथ गठजोड़ किए और मुंबई, पुणे, कोलकाता और गुरुग्राम में सात परियोजनाओं से कम से कम 175 करोड़ रुपये कमाए। पिछले आठ महीनों में ब्रांड ट्रंप भारत में आक्रामक विस्तार अभियान चला रहा है। 5 नवंबर, 2024 को संयुक्त राज्य अमेरिका के 47वें राष्ट्रपति के रूप में उनके चुनाव के तुरंत बाद, द ट्रंप ऑर्गनाइज़ेशन ने अपने भारतीय साझेदार ट्रिबेका डेवलपर्स के साथ मिलकर गुरुग्राम, पुणे, हैदराबाद, मुंबई, नोएडा और बेंगलुरु में कम से कम छह परियोजनाओं की घोषणा की, जिससे 80 लाख वर्ग फुट का रियल्टी विकास क्षेत्र विकसित होगा। इनसे ट्रम्प ऑर्गनाइजेशन की कमाई का खुलासा अभी नहीं किया गया है, लेकिन विशेषज्ञों का कहना है कि सबसे बड़े बिल्डरों के साथ इसकी साझेदारी न केवल ट्रम्प एंटरप्राइज को दुनिया की सबसे तेजी से बढ़ती अर्थव्यवस्था में सबसे आकर्षक बाजारों में प्रवेश करने की अनुमति देती है, बल्कि बिना किसी वित्तीय जोखिम के इसे निरंतर राजस्व प्रवाह भी प्रदान करती है।

अब तक बन चुके हैं कई प्रोजेक्ट

2012 में भारत में घोषित पहली परियोजना से लेकर, ब्रांड ट्रम्प का विस्तार इन परियोजनाओं के पूरा होने तक, लगभग चार गुना बढ़कर 11 मिलियन वर्ग फुट हो जाएगा, जो पिछले साल तक विकसित किए गए लगभग 3 मिलियन वर्ग फुट से एक बड़ी छलांग है। ट्रिबेका ने इस साल मार्च में पुणे में अपनी पहली वाणिज्यिक विकास परियोजना के शुभारंभ के दौरान बताया कि इन नए उपक्रमों से कम से कम 15,000 करोड़ रुपये की अनुमानित बिक्री क्षमता है। ट्रम्प ऑर्गनाइज़ेशन सीधे निर्माण में निवेश नहीं करता है। यह अपने ब्रांड को अग्रिम लाइसेंस शुल्क या विकास शुल्क के लिए उधार देता है, जो निर्माण से जुड़ा हो सकता है या, ज़्यादातर मामलों में, परियोजना की बिक्री में 3–5 प्रतिशत की हिस्सेदारी हो सकती है। इन संपत्तियों को आमतौर पर लग्ज़री डेवलपमेंट के रूप में बिल किया जाता है, और राष्ट्रपति के नाम से जुड़े होने के कारण फ्लैटों की कीमत अधिक होती है। भारत में इन परियोजनाओं को क्रियान्वित करने वालों में मुकेश अंबानी की रिलायंस इंडस्ट्रीज लिमिटेड (आरआईएल) जैसी बड़ी कंपनियाँ और लोढ़ा समूह, एम3एम समूह, पंचशील रियल्टी, आईआरए इंफ्रा और यूनिमार्क जैसी स्थापित रियल एस्टेट कंपनियाँ शामिल हैं। कल्पेश मेहता के नेतृत्व वाली ट्रिबेका डेवलपर्स भारत में द ट्रम्प ऑर्गनाइजेशन की आधिकारिक साझेदार है।

एक साल में 175 करोड़ का फायदा

एक साल से भी कम समय में ट्रंप की कंपनी को 175 करोड़ से ज्यादा का फायदा हुआ है। भारत में ट्रंप के नाम से कुल 13 प्रोजेक्ट्स चल रहे हैं। पुणे में एक प्रोजेक्ट के लॉन्च के दौरान ट्रंप के बेटे एरिक ट्रंप ने कहा, भारत ने हमारे ब्रांड को जबरदस्त उत्साह के साथ अपनाया है। वहीं, डोनाल्ड ट्रंप जूनियर भारत को हमारे बिजनेस के लिए सबसे तेजी से बढ़ता बाजार बता चुके हैं।द ट्रंप ऑर्गनाइजेशन न्यूयॉर्क की एक पारिवारिक कंपनी है, जिसे डोनाल्ड ट्रंप ने शुरू किया था। 2017 में राष्ट्रपति बनने के बाद उन्होंने कंपनी के रोज़ाना के कामकाज से खुद को अलग कर लिया और सारी ज़िम्मेदारी अपने बेटों को दे दी, लेकिन कंपनी पर उनका मालिकाना हक अब भी बरकरार है। अब प्रॉपर्टी का काम कितने कायदे से होता है और कितने रूल्स फॉलो होते हैं। किसी से छिपा नहीं है। ऐसे में क्या सरकार डीलिंग की जांच करेगी?

नारी रक्षा का संकल्प, एक सामाजिक चेतना

ललित गर्ग

भारत की सांस्कृतिक परंपराओं और त्योहारों की भूमि पर रक्षाबंधन एक ऐसा पर्व है जो केवल भाई–बहन के रिश्ते तक सीमित नहीं, बल्कि संपूर्ण समाज में आत्मीयता, कर्तव्यबोध, और नैतिक मूल्यों के पुनर्सवेदन का पर्व है। यह पर्व नारी अस्मिता, समानता, सुरक्षा और प्रेम की भावनाओं का प्रतिनिधित्व करता है। राखी का धागा जितना कोमल दिखता है, उतनी ही उसमें गहराई और दृढ़ता होती है, यह एक ऐसा लौकिक बंधन है, जो प्रेम, आदर्शों और जिम्मेदारियों से बंधा होता है। रक्षाबंधन कोई साधारण पर्व नहीं, यह आदर्शों का हिमालय है, संकल्पों का सोपान है। यह पर्व सिर्फ भाई–बहन के प्रेम की रस्म नहीं, बल्कि पुरुष समाज द्वारा नारी को आश्वस्त करने, उसका मान–सम्मान बनाए रखने की शपथ का दिन है। यह दिन हमें याद दिलाता है कि नारी केवल स्नेह की पात्र नहीं, वह शक्ति, श्रद्धा और समाज की दिशा तय करने वाली एक सशक्त प्रेरणा भी है।

आज जब महिलाएं समाज के हर क्षेत्र में बुलंदियों को छू रही हैं, सेना से लेकर विज्ञान, शिक्षा से लेकर खेल तक तब रक्षाबंधन उन्हें केवल भावनात्मक सुरक्षा नहीं, सामाजिक, राजनीतिक और सांस्कृतिक सम्मान दिलाने का भी माध्यम बनता है। रक्षाबंधन की महत्ता को समझने के लिए उसके ऐतिहासिक संदर्भों को जानना आवश्यक है। भविष्य पुराण में उल्लिखित कथा के अनुसार जब देव–दानव युद्ध में दानव भारी पड़ने लगे, तब इंद्राणी ने अपने पति इन्द्र की रक्षा हेतु रेशम का धागा मंत्रों के साथ उनके हाथ पर बांधा, जिससे इंद्र विजयी हुए।

मुगल काल में रानी कर्मवती ने जब चितौड़ पर संकट देखा, तो बादशाह हुमायूं को राखी भेजकर रक्षा की याचना की। हुमायूं ने धर्म, संप्रदाय और सत्ता से ऊपर उठकर उस धागे की लाज रखी और चितौड़ की रक्षा में अपनी ताकत झोंक दी। महाभारत में जब भगवान श्रीकृष्ण की उंगली से रक्त बहा, द्रौपदी ने अपनी साड़ी का पल्लू फाड़कर पट्टी बांध दी। श्रीकृष्ण ने उस प्रेम को जीवन भर निभाया और चीरहरण के समय द्रोपदी की रक्षा की। यह केवल ऋण चुकता नहीं था, यह आदर्शों की प्रतिज्ञा थी। इसी तरह सिकंदर और पुरू की कथा इस बात को दर्शाती है कि राखी का एक धागा युद्ध भूमि में भी जीवनदान का कारण बन सकता है। ये प्रसंग हमें बताते हैं कि राखी केवल प्रेम का प्रतीक नहीं, बल्कि रक्षा,

आदर्श और सम्मान की जीवंत प्रतिमा है।

रक्षाबंधन आज सिर्फ पारंपरिक पर्व नहीं, बल्कि एक सांस्कृतिक आंदोलन जैसा है। लेकिन दुख इस बात का है कि इस पर्व की आत्मा धीरे–धीरे खोती जा रही है। आज बहनों के लिए यह पर्व सजने–संवरने और उपहार पाने का माध्यम बनता जा रहा है, जबकि भाइयों के लिए यह केवल एक औपचारिकता बनकर रह गया है। राखी के धागों की वह पवित्रता, भावनाओं की वह गहराई, अब कम होती जा रही है। यह पर्व अब बाज़ारवाद और दिखावे के जाल में उलझता नजर आ रहा है। इस बदलती सोच को थामना और मूल भावनाओं को पुनः प्रतिष्ठित करना आज की सबसे बड़ी आवश्यकता है। इस पर्व का मूल उद्देश्य नारी के प्रति श्रद्धा, सुरक्षा और कर्तव्य का निर्वहन है, न कि केवल उपहार और दिखावे का आदान–प्रदान। भाइयों को चाहिए कि वे बहन की रक्षा की शपथ केवल शब्दों में नहीं, जीवन के प्रत्येक व्यवहार में निभाएं। बहनें भी राखी को केवल संबंध या औपचारिकता न समझें, बल्कि इस पर्व को नारी स्वाभिमान और सामाजिक बदलाव के एक माध्यम के रूप में लें।

आज जब समाज में महिलाओं के साथ अपराध बढ़ रहे हैं, जब बच्चियों से लेकर वृद्धाओं तक को भय और असुरक्षा का सामना करना पड़ रहा है, तब रक्षाबंधन एक ऐसा अवसर है जब हम केवल बहन नहीं, संपूर्ण नारी समाज की रक्षा का संकल्प लें। एक ऐसा संकल्प जो केवल राखी तक सीमित न हो, बल्कि जीवन भर के आचरण में झलके। यह पर्व हमें यह संदेश देता है कि नारी केवल स्नेह की नहीं, सम्मान की अधिकारिणी है। रक्षाबंधन भारत के विभिन्न अंचलों में अलग–अलग नामों से मनाया जाता है। उत्तर भारत में यह भाई–बहन के रिश्ते का पर्व है, वहीं महाराष्ट्र में नारली पूर्णिमा के रूप में समुद्र देवता को नारियल अर्पण कर मछुआरे समुद्र से अपने रिश्ते की रक्षा की प्रार्थना करते हैं। दक्षिण भारत में 'अवनी अविट्टम' के रूप में यह ब्राह्मणों का यज्ञोपवीत संकल्प का पर्व है। वहीं स्कन्द पुराण और श्रीमद्भागवत में उल्लिखित वामन अवतार की कथा में रक्षाबंधन को 'बलेव' के रूप में जाना जाता है, जब भगवान विष्णु ने तीन पग भूमि मांगकर राजा बलि का अभिमान तोड़ा था। इन सब कथाओं में एक ही संदेश है – अहंकार के स्थान पर समर्पण, दंभ के स्थान पर रक्षा, और स्वार्थ के स्थान पर सेवा।

आज रक्षाबंधन जैसे भावनात्मक और सांस्कृतिक पर्व भी कृत्रिम बुद्धिमता एवं संचार–क्रांति की आंधी में अपनी मूल आत्मा और संवेदना खोते जा रहे हैं। उपहारों की होड़, ब्रांडेड राखियों का प्रदर्शन, सोशल मीडिया पर दिखावे की होड़ ने इस पर्व को एक उपभोक्तावादी उत्सव में बदल दिया है। जहाँ पहले राखी एक भावनात्मक संबंध का प्रतीक थी, वहीं आज यह अधिकतर लेन–देन और औपचारिकता का माध्यम बनती जा रही है। इस प्रवृत्ति से पर्व की आत्मा, जिसमें बहन के प्रेम और भाई की जिम्मेदारी का गहन बोध निहित था, वह पीछे छूटता जा रहा है। इसलिए आवश्यक है कि हम रक्षाबंधन की प्रासंगिकता को केवल उपहार और खर्च की दृष्टि से नहीं, बल्कि नारी सम्मान, आत्मीय रिश्तों और सामाजिक जिम्मेदारियों के दृष्टिकोण से समझें और मनाएं।

राखी का पर्व हमें मानवीय रिश्तों की फिर से व्याख्या करने का अवसर देता है। यह पर्व हमें याद दिलाता है कि हर स्त्री हमारी बहन है, समाज की, संस्कृति की, मानवता की। उसकी रक्षा केवल सामाजिक कर्तव्य नहीं, बल्कि मानवीय धर्म है। जब हर पुरुष स्त्री के प्रति अपने कर्तव्य को राखी की तरह पवित्र समझेगा, जब हर बहन अपने भाई में केवल उपहार देने वाला नहीं, बल्कि एक मूल्य–धारी रक्षक देखेगी, तब रक्षाबंधन केवल एक पर्व नहीं, एक क्रांति का आरंभ बनेगा। रक्षाबंधन कोई मंच या मंचन नहीं है। यह प्रदर्शन का नहीं, आत्मचिंतन का पर्व है। हमें इस पर्व को बाजारवाद और औपचारिकता से निकालकर पुनः उसकी असली पहचान देना होगा। यह प्रेम और कर्तव्य के बीच की एक खूबसूरत कड़ी है। इस बार राखी के धागों को केवल कलाई तक न सीमित रखें, इन्हें हृदय से बाँधें, ताकि यह पर्व भाई–बहन के रिश्ते से आगे बढ़कर पूरे समाज में एक सशक्त और सुरक्षित वातावरण का निर्माण कर सके। तभी राखी के ये धागे सच्चे अर्थों में आदर्श बनेंगे और संकल्पों का सोपान।

Created by Universal Document Converter

सीआईएसएफ का प्रोजेक्ट मन, 'एमपावर' के सहयोग से 75,000 से अधिक कर्मियों को मानसिक स्वास्थ्य सहायता प्रदान करता है

परामर्श सेवाएँ और हस्तक्षेप पूरे बल में मनोबल बढ़ाते हैं

नई दिल्ली, 7 अगस्त। आज, आदित्य बिड़ला एजुकेशन ट्रस्ट (एबीईटी) की अध्यक्ष श्रीमती नीरजा बिड़ला और सीआईएसएफ महानिदेशक श्री आरएस भट्टी, आईपीएस ने संयुक्त रूप से प्रोजेक्ट मन की प्रगति की समीक्षा की। यह एक मानसिक स्वास्थ्य पहल है जिसके लिए सीआईएसएफ और एबीईटी ने नवंबर 2024 में एक समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर किए हैं।

सीआईएसएफ महानिदेशक ने जागरूकता निर्माण, परामर्श, नैदानिक हस्तक्षेप और सीआईएसएफ कर्मियों के प्रशिक्षण के माध्यम से मानसिक स्वास्थ्य जागरूकता पैदा करने में एबीईटी पेशेवरों की भूमिका की सराहना की।

प्रोजेक्ट मन अब तक 75,181 सीआईएसएफ कर्मियों और उनके परिवारों की मदद करने में सक्षम रहा है।

एबीईटी ने कम जोखिम वाले मानसिक स्वास्थ्य मुद्दों की पहचान और प्रबंधन करने तथा गंभीर मामलों को पेशेवरों तक पहुँचाने के लिए 1,726 सीआईएसएफ अधिकारियों और उप–अधिकारियों को भी प्रशिक्षित किया है। इस द्वि–स्तरीय संरचना ने जमीनी स्तर पर मनोवैज्ञानिक सहायता को और अधिक सुलभ बना दिया है।

दिल्ली हवाई अड्डा, संसद भवन, दिल्ली मेट्रो जैसी अति संवेदनशील इकाइयों में संभावित समस्याओं की शीघ्र पहचान के लिए 31,000 से अधिक कर्मियों का मनोवैज्ञानिक मूल्यांकन किया गया है।

इस पहल के परिणामस्वरूप अवसाद, वैवाहिक कलह, वित्तीय तनाव आदि के मामलों में परामर्श और हस्तक्षेप संभव हुआ है।

उल्लेखनीय है कि वर्ष 2024 और 2025 के दौरान सीआईएसएफ की आत्महत्या दर राष्ट्रीय औसत से कम हो गई है, जो इस पहल के प्रभाव को दर्शाता है।

प्रोजेक्ट मन की सफलता और प्रभाव को देखते हुए, सीआईएसएफ महानिदेशक और श्रीमती नीरजा बिड़ला ने संयुक्त रूप से आगामी वर्षों के लिए इस सहायता को जारी रखने का निर्णय लिया है।

इस पहल के महत्व पर प्रकाश डालते हुए सीआईएसएफ महा. निदेशक ने कहा, "मानसिक स्वास्थ्य हमारे कर्मियों के लिए शारीरिक फिटनेस जितना ही महत्वपूर्ण है।

यह पहल हमारी आंतरिक सहायता प्रणालियों को मजबूत करती है और यह सुनिश्चित करती है कि हमारे कर्मी भावनात्मक रूप से लचीले, केंद्रित और परिचालन के लिए तैयार रहें।"

आदित्य बिड़ला एजुकेशन ट्रस्ट की संस्थापक और अध्यक्ष, एमपॉवर, श्रीमती नीरजा बिड़ला ने कहा – "सीआईएसएफ के साथ हमारी दीर्घकालिक साझेदारी इस बात का प्रमाण है कि मानसिक स्वास्थ्य को संस्थागत रूप देने से क्या हासिल किया जा सकता है।

पिछले तीन वर्षों में, प्रोजेक्ट मन ने देश भर में सीआईएसएफ इकाइयों में 75,000 से अधिक कर्मियों को साइकोमेट्रिक स्क्रीनिंग, परामर्श, सहकर्मी जुड़ाव और 24/7 हेल्पलाइन के माध्यम से सहायता प्रदान की है। हम सीआईएसएफ की समग्र कल्याण के प्रति प्रतिबद्धता की सराहना करते हैं, जिसके तहत वेलनेस प्रोटोकॉल और देखभाल को दैनिक प्रणाली में एकीकृत किया गया है, जिसके परिणामस्वरूप आत्महत्या की घटनाओं में 40 प्रतिशत की कमी आई है, जो एक सकारात्मक परिणाम है।"

टीसी होने के बावजूद बच्चों को नहीं मिल रहा स्कूलों में दाखिला

अमित कपूर के नेतृत्व में अभिभावकों ने बच्चों संग किया विरोध प्रदर्शन

मामले की सीबीआई जांच कराने की मांग, सीईओ से स्थिति स्पश्ट करने की उठाई मांग

जम्मू। पेरेंटेस एसोसिएशन जम्मू के अध्यक्ष अमित कपूर के नेतृत्व में टीसी होने के बावजूद स्कूलों में दाखिला नहीं मिलने से प्रभावित बच्चों के अभिभावकों ने बच्चों संग जोरदार तरीके से विरोध प्रदर्शन किया और स्कूल शिक्षा विभाग के खिलाफ जमकर नारेबाजी की।

इस दौरान उन्होंने कहा कि सनराईज पब्लिक स्कूल छन्नी में विभिन्न कक्षाओं में पढ़ने वाले बच्चों को स्कूल की तरफ से ट्रांसफर सार्टिफिकेट दिए गए हैं जिन पर मुख्य शिक्षा अधिकारी जम्मू के हस्ताक्षर हैं। उन्होंने कहा कि इसके बावजूद उनके बच्चों को विभिन्न स्कूलों में दाखिला नहीं मिल रहा है और यह कहा जा रहा है कि यह टीसी नहीं चलेगा। इससे करीब 30 से 40 बच्चों का भविष्य अधर में लटक गया है।

इस दौरान प्रदर्शनकारियों को संबोधित करते हुए अमित कपूर ने स्कूल शिक्षा विभाग को आड़े हाथों लेते हुए कहा कि इस मामले में जम्मू के मुख्य शिक्षा अधिकारी को सामने आना चाहिए और स्थिति स्पष्ट करनी चाहिए क्योंकि इन टीसी पर उनके हस्ताक्षर हैं। उन्होंने आगे कहा कि उनको यह भी स्पष्ट करना चाहिए कि यह टीसी असली है या नकली हैं और आखिर क्योंकर बच्चों को दाखिला नहीं दिया जा रहा है। उन्होंने सनराईज पब्लिक स्कूल छन्नी पर करारा प्रहार करते हुए कहा कि इस स्कूल की कार्यप्रणाली को लेकर भी जांच होनी चाहिए।

उन्होंने कहा कि जम्मू कश्मीर सरकार को चाहिए कि वो दिल्ली का मॉडल अपनाते हुए बच्चों को बिना टीसी के दाखिला देने का प्रावधान करे। उन्होंने यह भी आरोप लगाया कि बच्चों से टीसी के लिए पैसे मांगे जा रहे हैं। इसके साथ ही उन्होंने इस स्कूल पर एफआईआर दर्ज करने की भी मांग की क्योंकि इसने कई बच्चों के भविष्य के साथ खिलवाड़ किया है। वहीं बच्चों ने भी इस दौरान आरोप लगाया कि स्कूल प्रबंधन का कहना है कि उसने उनको अनाथ समझकर शिक्षा दी है और इसके आगे वो उनको शिक्षा नहीं देगें।

अमित कपूर ने कहा कि इस सारे मामले की सीबीआई जांच कराई जानी चाहिए ताकि सच्चाई लोगों के सामने आ सके और दोषी पाए जाने वाले लोगों के खिलाफ कड़ी कार्रवाई की जा सके। इसके साथ ही उन्होंने यह भी कहा कि सीईओ जम्मू को इस मामले में सामने आना चाहिए और स्थिति को स्पष्ट करना चाहिए। इसके साथ ही उन्होंने स्कूल शिक्षा विभाग के निदेशक, शिक्षा मंत्री और मुख्यमंत्री उमर अब्दुल्ला से कहा है कि वो इस मामले को गंभीरता से लें और एक आदेश जारी करें ताकि इन बच्चों को स्कूलों में दाखिला मिल सके। इस दौरान समाजसेवी सरदार अमरीक सिंह और अन्य ने भी अपने विचार प्रकट किए।

गांव रेहाल में रघुनाथ मंदिर के पास भव्य द्वार का निर्माण कार्य शुरू करवाय

संवाददाता

जम्मू। विश्नाह तहसील के अधीन आते गाव रेहाल में रघुनाथ मंदिर के पास आज बाबा दुर्गा दास जी महाराज की याद में बनने वाले श्री रघुनाथ द्वारा का शिलान्यास किया गया। इस अवसर पर जम्मू कश्मीर संत न्यास के संगठन महामंत्री महंत राजेश बिट्टू विशेष तौर पर इस कार्यक्रम में पधारे हुए थे जबकि श्री रघुनाथ मंदिर जी के महंत रामनारायण दास शास्त्री, राज. श्वर गिरी जी महाराज, खेम. राज शास्त्री जी, पंडित वेद प्रकाश , नंबरदार दीवान चंद, अशोक गुप्ता तथा कुलदीप खजुरिया सहित काफी संख्या में साधु संत इस समारोह के दौरान उपस्थित रहे। इस मौके पर विद्वानों की तरफ से जहां विद्वानों की तरफ से मंत्र उच्चारण किया गया, वहीं महंत राजेश बिट्टू की तरफ से इस कार्य की शुरुआत की गई। इस

मौके पर महंत राजेश बिट्टू ने कहा कि गांव रेहाल में एक विशाल द्वार बनने जा रहा है जो गांव के साथ–साथ मंदिर को भी एक अलग पहचान देगा। महंत ने कहा कि बाबा दुर्गा दास जी महाराज की याद में इस भव्य द्वार का निर्माण कार्य होने जा रहा है जिसमें क्षेत्र के सभी लोगों का भरपूर योगदान है। उन्होंने इस कार्य के लिए महंत रामनारायण दास शास्त्री जी महाराज तथा पूरे गांववासियों को अपनी तरफ से मुबारकबाद देते हुए कहा की सभी के प्रयासों के कारण श्री रघुनाथ द्वार का शिलान्यास हुआ है।

चंदेल ने कहा अमेरिका के टैरिफ का जवाब भारत रूस चीन इजरायल मिलकर काम करें

अमेरिका की दादागिरी खत्म करने के लिए भारत को अपना संयुक्त राष्ट्र संघ बनना चाहिए

संवाददाता

जम्मू। भारतीय जनता पार्टी के वरिष्ठ नेता एवं महंत गुरु जी राजू चंदेल ने आज पत्रकारों से बात करते हुए कहा कि लगातार अमेरिका टैरिफ के नाम पर भारत चीन रूस पर सैंक्शन पर सैंक्शन लगता चला जा रहा है और डरा रहा है उसके लिए मैं भारत के गौरवशाली अपने प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी जी से कहना चाहता हूं कि अमेरिका हमारा कभी भी नहीं हो सकता रूस हमारा सबसे सच्चा मित्र है इसराइल हमारा सच्चा मित्र है अगर चीन खुलकर भारत के साथ ईमानदारी के साथ खड़ा होता है तो हम अमेरिका को झुका सकते हैं और उसका टैरिफ कागजों तक ही सीमित होकर रह जाएगा आज भारत रूस चीन इजरायल अपने आप में बहुत बड़ी विश्व की ताकत है अगर एक मंच पर आकर इंसानियत को बचाने के लिए मिलकर के काम किया जाए भारत तो हमेशा चीन के साथ मित्र भाव रखना चलाया है परंतु चालबाज चीन हमेशा ही भारत को धोखा देता चलाया है चीन अपनी धोखेबाजी की फितरत को त्याग दे तो अमे. रिका की कोई ताकत नहीं की किसी भी देश को धमकाएं भारत तो अमेरिका के सामने ना कभी झुका है ना झुकेगा अगर सभी देश भारत के साथ मिलकर के कम करें तो अमे. रिका की औकात नहीं कि वह हमें धमका सके।

चंदेल ने कहा कि देश के गौरवशाली प्रधानमंत्री तमाम देशों के साथ रुपए में ही व्यापार करें डॉलर को तमाम देश जानकारी दें तो अमेरिका की दादागिरी तुरंत खत्म हो जाएगी भारत के पास काफी संभावना है संयुक्त राष्ट्र जैसी संस्था जो देश अमेरिका के द्वारा पीड़ित है सभी को एक मंच पर लाकर एक नए संयुक्त राष्ट्र की स्थापना भारत को करनी चाहिए अब समय आ गया है कि पूरे विश्व के लोग अमेरिका की दादागिरी को

नकारे और भारत के झंडे के नीचे रुपए में व्यापार करते हुए कदम से कदम बढ़ाए।

चंदेल ने कहां की पूरे विश्व के लोगों को एक मंच लाने का काम विश्व के सबसे चहेते हमारे देश के गौरवशाली प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी जी ही कर सकते हैं।

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी जी ऐसी शख्सियत है जो डॉलर की हैसियत को समाप्त कर सकते हैं और अपना संयुक्त राष्ट्र संघ भारत में बना सकते हैं तमाम एशिया और पश्चिम के देशों को एक साथ लेकर क्योंकि वर्तमान में जो संयुक्त राष्ट्र संघ बना हुआ है मात्र एक कठपुतली बनकर रह गया है वह कभी भी भारत को स्थाई सदस्य नहीं बना सकता इसलिए आप जरूरी हो गया है कि भारत को अपने यहां संयुक्त राष्ट्र संघ का हेड क्वार्टर दिल्ली बनाना चाहिए और एक नए संयुक्त राष्ट्र संघ की स्थापना करनी चाहिए जिसमें विश्व भर के तमाम देश भारत की छत्रछाया में मिलकर काम कर सकें और भारत के अंदर क्षमता है पूरे विश्व का नेतृत्व करने के लिए गौरवशाली प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी जी के नेतृत्व में तभी अमेरिका की दादागिरी खत्म होगी और पूरे विश्व के लोग परमाणु युद्ध से मुक्त भय मुक्त आतंकवाद मुक्त होकर अपना जीवन जी सकेंगे।

चंदेल ने कहा कि हम परमाणु संपन्न देश हैं परंतु यह परमाणु हथियार हमारे देश की रक्षा के लिए हैं किसी का विनाश या विध्वंस करने के लिए नहीं आज विश्व भर में जितनी भी इस्लामिक विदेशी ताकत है सनातन हिंदू धर्म को बदनाम करने एवं भगवा को आतंकवादी से जोड़ने का काम कर रहे हैं इस षड्यंत्र में कुछ देश के जयचंद गद्दार भी शामिल हैं आज उन जयचंद गद्दारों और पड़ोसी मुल्क आदि के मुंह पर मालेगांव कोर्ट द्वारा ऐतिहासिक फैसला सनातनी हिंदुओं के पक्ष में सुनाए जाने पर साबित हो चुका है कि पूरे विश्व भर में भगवा आतंकवाद नाम की कोई चीज है ही नहीं यह सब षड्यंत्र इस्लामिक देश और कुछ देश में बैठे जयचंद की ओला दो द्वारा फैल गया था। सही मायने में सनातन हिंदुओं की सबसे बड़ी जीत है भगवा कभी आतंकवाद या आतंकवादी नहीं हो सकते।

Printer, Publisher, Owner, Editor by: Sanktha Prasad Singh Published from: GH Road Skara, Near Ladakh Public School, Leh (Ladakh) - 194104, Published from: Ladakh Imperial Printing press, Gh Skara, Near Ladakh Public School, Leh Ladakh, 194104, Mob.: Mob.: 9818069272, 8287390112, Email: ladakhtoday@gmail.com
**All disputes are subject to the exclusive jurisdiction of competent courts and forums in Leh - city.

Created by Universal Document Converter